RAJYA SABHA

Thursday, the 10th August, 2017/19th Shravana, 1939 (Saka)

The House met at eleven of the clock,
MR. CHAIRMAN *in the Chair.*

FAREWELL TO THE CHAIRMAN

THE LEADER OF THE HOUSE (SHRI ARUN JAITLEY): Mr. Chairman, Sir, in the life of this House, today is a very important occasion. We are today bidding farewell to you, Sir, after you have completed ten years as a very distinguished Chairperson of this House.

Ten years is, indeed, a very long association, and, therefore, it is for you and also the Members of this House a nostalgic occasion. Sir, before becoming the Chairperson of this House as the Vice-President of India, you had experience in various fields of public life. You had been a very distinguished diplomat; you had chaired important commissions, committees, universities but dealing with political fraternity was a different experience altogether, and, that is an experience which you had in your different capacities as the Chairperson of this House. Of course, I am one of the few fortunate Members, who, through your ten-year tenure, dealt with you, or, you dealt with us, for each of these ten years that we were the Members of this House and you were the Chairperson.

Sir, the Chairperson's job is a very challenging job in this House for the reason that this House, unlike in the 1950s and 1960s, now has a changed character. It really reflects the strength of the parties in the States, ...(*Interruptions*)...

MR. CHAIRMAN: Silence, please.

SHRI ARUN JAITLEY: It really reflects the strength of the parties in the States, and, therefore, those sitting on either side keep changing, and, as my friend, Sitaram always mentions, those in the middle keep sitting there. And, in fact, their role always remains the same, the content of their speeches also remain the same, irrespective of who is sitting on either side of the House.

I say this for a particular feature that the character of this House is that things start with a lot of acrimonious debate, or, now, these disruptions, but, eventually, — and, Sir, you would have seen this during your ten-year tenure — nothing remains indefinitely held up. At the end of the day, the system of political consensus works in this House, and, irrespective of who is in the Government or who is in the Opposition, a consensus is eventually reached, and, in forcing that convention, the

[Shri Arun Jaitley]
flexibility, which the Chair has at its command, does play a role, which eventually does force that consensus. As I said, a Chairman's job is also a thankless job. It is a mixed job because you take the good with the not-so-good. We had seen at times when we, the Members, disrupted the House, your anguish was visible. And it was more visible in your concluding statements at the end of the Session. But then this House also has a tendency to work overtime when it starts working and cover up for all the lost time and do both the official Business and the debates. Your tenure might have seen not just disturbances but also very high quality of debates on several occasions. I am sure we will all relish those debates and you will carry with you memories of those debates.

Your tenure had many interesting anecdotes. I only remember one of them when in an exasperation you called us 'a federation of anarchists', — some of us and I was one of the culprits in that; we wanted the Chair to set up a precedent of expunging its own remarks — rather than taking offence to it, you used that as an opportunity for a democratic debate on whether there was anything objectionable in the word 'anarchists' and the debate took an interesting dimension whether anarchists can at all have a federation because each anarchist is a solo player who plays for himself and can never join others. The debate didn't end, but I do recollect the memory of that debate. A few days ago, you called me and actually found yourself vindicated where somewhere in the world the anarchists had formed a federation and you thought it was a vindication of your use of the English language itself.

I am sure you retire from this House with great memories. We all recollect the sage advice that you kept giving to us and, through us, to the country from time to time. I wish you, Sir, all the best. We will always have memories of you as the Chair and how you lent dignity to the quality of debates in this House while presiding over it. We wish you very good health and many, many more years in the service of this country. Thank you very much, Sir, for all that you have done.

MR. CHAIRMAN: Thank you, Arunji. Thank you very much. Now, hon. Prime Minister.

प्रधान मंत्री (श्री नरेंद्र मोदी): आदरणीय सभापति जी, एक दीर्घकालीन सेवा के बाद आज आप नए कार्यक्षेत्र की तरफ प्रयाण करेंगे, ऐसा मुझे पूरा भरोसा है, क्योंकि फिजिकली आपने अपने आपको काफी फिट रखा है। एक ऐसा परिवार, जिसका करीब सौ साल का इतिहास सार्वजनिक जीवन का रहा — इनके नाना जी, इनके दादा जी कभी राष्ट्रीय पार्टी के अध्यक्ष रहे, कभी संविधान सभा में रहे, एक प्रकार से आप उस परिवार की पृष्ठभूमि से आते हैं, जिनके पूर्वजों की सार्वजनिक जीवन में, विशेषकर कांग्रेस के जीवन के साथ और कभी खिलाफत मूवमेंट के साथ भी काफी कुछ सक्रियता रही है। आपका अपना जीवन भी एक कैरियर डिप्लोमैट का

रहा। कैरियर डिप्लोमैट क्या होता है, वह तो मुझे प्रधान मंत्री बनने के बाद ही समझ में आया, क्योंकि उनके हंसने का अर्थ क्या होता है, उनके हाथ मिलाने के तरीके का क्या अर्थ होता है, वह तुरन्त समझ में नहीं आता है। क्योंकि उनकी training वही होती है। लेकिन उस कौशल्य का उपयोग आपको यहां इन 10 सालों में जरूर हुआ होगा कि सबको सँभालने में उस कौशल्य ने किस प्रकार से इस सदन को लाभ पहुँचाया होगा। आपके कार्यकाल का बहुत सारा हिस्सा वेस्ट एशिया से जुड़ा रहा है, as a diplomat. आपकी जिन्दगी के बहुत वर्ष उसी दायरे में गए। आप उसी माहौल में, उसी सोच में, उसी डिबेट में ऐसे लोगों के बीच रहे। वहां से रिटायर होने के बाद भी आपका ज्यादातर काम वही रहा, Minority Commission हो या अलीगढ़ यूनिवर्सिटी हो, तो आपका दायरा वही रहा। लेकिन ये 10 साल पूरी तरह एक अलग जिम्मा आपके जिम्मे आया — पूरी तरह एक-एक पल संविधान, संविधान और संविधान के ही दायरे में उसको चलाना — आपने उसको बखूबी निभाने का भरपूर प्रयास किया है। हो सकता है भीतर आपके अन्दर भी कुछ छटपटाहट रही होगी, लेकिन शायद आज के बाद आपको वह संकट नहीं रहेगा, एक मुक्ति का आनन्द भी रहेगा और जो आपकी मूलभूत सोच रही होगी, उसके अनुसार आपको कार्य करने का, सोचने का, बात बताने का अवसर भी मिलेगा।

आपसे मेरा परिचय ज्यादा तो नहीं रहा, लेकिन जब भी मिलना हुआ, आपसे काफी कुछ जानने-समझने को मिलता था। मेरे विदेश यात्रा पर जाने से पहले और आने के बाद जब मुझे आपसे बात करने का मौका मिलता था, तो आपकी जो एक insight थी, उसका मैं जरूर अनुभव करता था। वह मुझे चीजों को, जो दिखती हैं, उसके सिवाय क्या हो सकती हैं, इसको समझने का एक अवसर देती थी। इसलिए मैं हृदय से आपका बहुत आभारी हूँ।

मेरी तरफ से आपको हृदय से बहुत-बहुत शुभकामनाएँ हैं। राष्ट्र के उपराष्ट्रपति के रूप में आपकी सेवाओं के लिए दोनों सदनों की तरफ से और देशवासियों की तरफ से भी आपके प्रति आभार का भाव है। आपका कर्तृत्व, आपका यह अनुभव और इस पद के बाद की निवृत्ति अपने आपमें एक लंबे अरसे तक सामाजिक जीवन में इस बात का वजन रखती हैं। राष्ट्र के संविधान की मर्यादाओं के चलते हुए देश का मार्गदर्शन करने में आपका समय और शक्ति काम आएगी, ऐसी मेरी पूरी शुभकामनाएँ हैं। बहुत-बहुत धन्यवाद।

विपक्ष के नेता (श्री गुलाम नबी आज़ाद): जनाब चेयरमैन साहब, आज हम सब यहां एक भारी दिल से आपकी विदाई का भाषण कर रहे हैं। पिछले 38 साल से मुझे आपको जानने का मौका मिला। 1980 में जब मैं पहली दफा एमपी बना और कुछ महीनों में ही Youth Organization का Head बना, तो उस वक्त आज के मुकाबले Youth Congress President तकरीबन हर बड़े official function में मौजूद होता था। प्राइम मिनिस्टर को एयर फोर्स के एयरपोर्ट पर receive करने, see off करने, dignitaries को receive करने में वह शामिल होता था। आप उस वक्त Chief of Protocol थे और इन्दिरा गांधी जी के बहुत निकट थे, close थे। मैं देख रहा हूँ कि उसके बाद मैंने किसी भी Chief of Protocol की शक्ल कहीं नहीं देखी। लेकिन उन दिनों बहुत activities होती थीं, Heads of States आते थे, Heads of Governments आते थे, शायद यह भी कारण है कि उन दिनों एयर फोर्स के पालम एयरपोर्ट जाकर receive और see off करना होता था। उसके बाद जब से यहां राष्ट्रपति भवन में उनका आना शुरू हो गया, तो Chief of Protocol की शक्ल गायब हो गई। तब से मैंने आपको देखा कि इन्दिरा गांधी जी के पूरे वक्त में, जब तक

[श्री गुलाम नबी आज़ाद]

वे जिंदा रहीं, तब तक आप एक बहुत ही कामयाब Chief of Protocol रहे, बल्कि उनके मरने के बाद भी, उनकी हत्या के बाद भी आप एक साल Chief of Protocol रहे। जब आप सऊदी अरब में Ambassador थे, तब भी मुझे आपसे मिलने का मौका मिला। आपको तो कई देशों की Embassies में काम करने का मौका मिला और आप कई मुमालिक के Ambassador बने, लेकिन जब मैं अपने मुल्क की तरफ से हज delegation का लीडर था, उस वक्त आप Ambassador थे, तब हमें एक-दूसरे को और नज़दीक से जानने का मौका मिला। जब आप अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के वाइस-चांसलर रहे, उस वक्त भी आपके काम को पूरे मुल्क में सराहा गया और खास तौर से जो education बिरादरी है, उसमें आपके काम को बहुत सराहा गया।

मैं आपका बहुत आभार प्रकट करता हूं और आपको मुबारकबाद देता हूं कि जब मैं चीफ मिनिस्टर था, तब माननीय प्रधान मंत्री, डा. मनमोहन सिंह जी ने कश्मीर के मुद्दे को सुलझाने और तमाम पॉलिटिकल पार्टीज को कॉन्फीडेंस में लेने के लिए तीन राउंड टेबल कॉफ्रेंस का गठन किया। उसके बाद पांच Working Groups बने। मैंने आपको प्रधान मंत्री जी की ओर से खत लिखा और आपसे गुज़ारिश की कि आप एक वर्किंग ग्रुप को चेयर कर लीजिए, तो आपने उसे मंजूर किया। वह ग्रुप on confidence building measures across segments of the society था। सभी दलों के लोग उसमें थे। बीजेपी, left, सेंटर, कांग्रेस, लद्दाख एवं जम्मू-कश्मीर आदि सभी दलों और पार्टियों के लोग थे। आज की राजनीति में जम्मू-कश्मीर में Confidence Building Measures कोई आसान चीज नहीं है। आपने सभी को confidence में लेकर, सभी groups को आपने सुना, तमाम लोगों को सुना और 11 महीने में अपनी रिपोर्ट दी, जबकि कई ग्रुप्स के चेयरमैनों को अपनी रिपोर्ट्स देने में एक-एक और दो-दो साल लगे। मुझे उम्मीद है कि यह सरकार कभी उस पर अमल करने की कोशिश करेगी।

आपने चेयरमैन के तौर पर National Minorities Commission में जो काम किया, वह भी हमेशा सराहनीय रहेगा। आपने किताबें लिखीं और आपको कई देशों ने Honorary Degrees भी दीं, जिनका आपने कभी इस्तेमाल नहीं किया। जहां तक मुझे जानकारी है, उसके अनुसार आपको तीन देशों ने Honorary Degree दी, जो बहुत मशहूर Universities हैं और बहुत मशहूर देश भी हैं, लेकिन आपने उनका कभी इस्तेमाल नहीं किया। अपने देश में भी आपको लगभग 34 साल पहले 'पद्मश्री' से नवाज़ा गया।

आप Sports Man हैं। आपके साथ golf खेलने का भी मौका मिला। मैंने तो पिछले आठ-नौ साल से golf खेलना छोड़ दिया, लेकिन मैं समझता हूं कि अब आपको golf खेलने का समय मिलेगा। अब आपको अपनी hobby को पूरा करने के लिए खूब समय मिलेगा। मुझ से तो golf छूट गई। मैं भी इंतजार करता हूं कि कब permanently retire होऊं और कब अपनी golf खेलने की हॉबी को पूरा करूं। यदि ऐसा हुआ, तो मैं भी शायद कहीं न कहीं जल्दी आपको पकड़ लूंगा।

सर, आपका यह period बहुत ही शानदार रहा। मुझे साल 1980 से लेकर आज तक सात Chairmen के साथ काम करने का मौका मिला और कुछ दिनों के बाद आठवें चेयरमैन के साथ काम करने का अवसर प्राप्त होगा। ...(**व्यवधान**)...

†**قائد حزب اختلاف (جناب غلام نبی آزاد):** جناب چیئرمین صاحب، آج ہم سب یہاں ایک بھاری دل سے آپ کی وداعی کا بھاشن کر رہے ہیں۔ پچھلے اڑتیس سال سے مجھے آپ کو جاننے کا موقع ملا۔ 1980 میں جب میں پہلی دفعہ ایم۔پی۔ بنا اور کچھ مہینوں میں ہی 'یوتھ آرگنائزیشن' کا ہیڈ بنا، تو اس وقت آج کے مقابلے یوتھ کانگریس پریزیڈینٹ تقریبا ہر بڑے آفیشئل فنکشن میں موجود ہوتا تھا۔ پرائم منسٹر کو ایئر فورس کے ایئرپورٹ پر receive کرنے، see off کرنے، dignitaries کو receive کرنے میں وہ شامل ہوتا تھا۔ آپ اس وقت Chief of Protocol تھے اور اندر گاندھی جی کے بہت نزدیک تھے، کلوز تھے، میں دیکھ رہا ہوں کہ اس کے بعد میں نے کسی بھی Chief of Protocol کی شکل نہیں دیکھی۔ لیکن ان دنوں بہت activities ہوتی تھیں، ہیڈس آف اسٹیٹس آتے تھے، ہیڈس آف گوورنمینٹس آتے تھے، شاید یہ بھی وجہ ہے کہ ان دنوں ایئر فورس کے پالم ایئر پورٹ جاکر receive اور see off کرنا ہوتا تھا۔ اس کے بعد جب سے یہاں راشٹرپتی بھون میں ان کا آنا شروع ہو گیا، تو Chief of Protocol کی شکل غائب ہو گئی۔ تب سے میں نے آپ کو دیکھا کہ اندرا گاندھی جی کے پورے وقت میں، جب تک وہ زندہ رہیں، تب تک آپ ایک بہت ہی کامیاب Chief of Protocol رہے، بلکہ ان کے مرنے کے بعد بھی، ان کی ہتیا کے بعد بھی آپ ایک سال Chief of Protocol رہے۔ جب آپ سعودی عرب میں امبیسڈر تھے، تب بھی مجھے آپ سے ملنے کا موقع ملا اور آپ کو تو کئی دیشوں کی امبیسیز میں کام کرنے کا موقع ملا اور آپ کئی ممالک کے امبیسڈر بنے، لیکن جب میں اپنے ملک کی طرف سے حج ڈیلی-گیشن کا لیڈر تھا، اس وقت آپ امبیسڈر تھے، تب ہمیں ایک دوسرے کو اور نزدیک سے جاننے کا موقع ملا۔ جب آپ علی گڑھ مسلم یونیورسٹی کے وائس چانسلر رہے، اس وقت بھی آپ کے کام کو پورے ملک میں سراہا گیا اور خاص طور سے جو ایجوکیشن برادری ہے، اس میں آپ کے کام کو بہت سراہا گیا۔

میں آپ کا بہت آبھار پرکٹ کرتا ہوں اور آپ کو مبارکباد دیتا ہوں کہ جب میں چیف منسٹر تھا، تب مائنے پردھان منتری، ڈاکٹر منموہن سنگھ جی نے کشمیر کے مدّعے کو سلجھانے اور تمام پولیٹیکل پارٹیز کو کونفڈینس میں لینے کے لئے تین راؤنڈ ٹیبل کانفرنس کا گٹھن کیا۔ اس کے بعد پانچ ورکنگ گروپس بنے۔ میں نے آپ کو

† Transliteration in Urdu script.

[श्री गुलाम नबी आज़ाद]

پردھان منتری جی کی اور سے خط لکھا اور آپ سے گزارش کی کہ آپ ایک ورکنگ گروپ کو چیئر کر لیجئے، تو آپ نے اسے منظور کیا۔ وہ گروپ on confidence building measures across segments of the society تھا۔ سبھی دلوں کے لوگ اس میں تھے۔ بی۔جے۔پی۔، لیفٹ، سینٹر، کانگریس، لدّاخ، جموں و کشمیر وغیرہ سبھی دلوں اور پارٹیوں کے لوگ تھے۔ آج کی راجنیتی میں، جموں و کشمیر میں Confidence Building Measures، کوئی آسان چیز نہیں ہے۔ آپ نے سبھی کو کونفڈینس میں لے کر ،سبھی گروپس کو آپ نے سنا، تمام لوگوں کو سنا اور گیارہ مہینے میں اپنی رپورٹ دی جبکہ کئی گروپس کے چیئرمینوں کو اپنی رپورٹس دینے میں ایک ایک اور دو دو سال لگے۔ مجھے امید ہے کہ یہ سرکار کبھی اس پر عمل کرنے کی کوشش کرے گی۔

آپ چیئرمین کے طور پر نیشنل مائنارٹی کمیشن میں جو کام کیا، وہ بھی ہمیشہ سراہنئے رہے گا۔ آپ نے کتابیں لکھیں اور آپ کو کئی دیشوں نے آنریری ڈگری بھی دیں، جن کا آپ نے کبھی استعمال نہیں کیا۔ جہاں تک مجھے جانکاری ہے، اس کے مطابق آپ کو تین دیشوں میں آنریری ڈگری دی، جو بہت مشہور یونیورسٹیز ہیں اور بہت مشہور دیش بھی ہیں، لیکن آپ نے ان کا کبھی استعمال نہیں کیا۔ اپنے دیش میں بھی آپ کو لگ بھگ 34 سال پہلے 'پدم -شری' سے نوازا گیا۔

آپ اسپورٹس-مین ہیں۔ آپ کے ساتھ گولف کھیلنے کا بھی موقع ملا۔ میں نے تو پچھلے آٹھ-نو سال سے گولف کھیلنا چھوڑ دیا، لیکن میں سمجھتا ہوں کہ اب آپ کو گولف کھیلنے کا وقت ملے گا۔ اب آپ کو اپنی ہوبی کو پورا کرنے کے لئے خوب وقت ملے گا۔ مجھ سے تو گولف چھوٹ گئی۔ میں انتظار کرتا ہوں کہ اب permanently retire ہوؤں اور کب اپنی گولف کھیلنے کی ہوبی کو پورا کروں۔ اگر ایسا ہوا، تو میں بھی شاید کہیں نہ کہیں جلدی آپ کو پکڑ لوں گا۔

سر، آپ کا یہ پیریڈ بہت ہی شاندار رہا۔ مجھے سال 1980 سے لے کر آج تک سات چیئرمین کے ساتھ کام کرنے کا موقع ملا اور کچھ دنوں کے بعد آٹھویں چیئرمین کے ساتھ کام کرنے کا موقع حاصل ہوگا ---**(مداخلت)**---

श्री नरेश अग्रवाल (उत्तर प्रदेश)ः कल से ही आपको अगले चेयरमैन के साथ काम करने का अवसर मिल जाएगा। ...**(व्यवधान)**...

श्री गुलाम नबी आज़ादः कल तो नहीं, लेकिन अगले सत्र से उनके साथ काम करने का अवसर अवश्य मिलेगा।

सर, जितने भी Chairmen के साथ मुझे काम करने का अवसर मिला, वे बहुत अच्छे Chairmen थे, फिर चाहे किसी भी पार्टी के रहे हों। उस तरफ की पार्टी के भी थे और इस तरफ की पार्टी के भी थे, लेकिन सभी के साथ मेरे बहुत मधुर संबंध रहे, भले ही वे मंत्री के रूप में रहे या साधारण एमपी के रूप में रहे, लेकिन मेरे विपक्ष के नेता के रूप में आप पहले चेयरमैन हैं, जिन्हें ज्यादा नज़दीक से जानने का मौका मिला। क्योंकि एमपी के तौर पर और मिनिस्टर के तौर पर चेयरमैन से उतना ज्यादा सम्बन्ध नहीं होता है, हाउस में ही सम्बन्ध रहता है, लेकिन Leader of the House और Leader of the Opposition चेयरमैन के ज्यादा क्लोज़ रहते हैं, चाहे वे कोई भी चेयरमैन हों, डिप्टी चेयरमैन हों या चेयरपरसन हों। इसलिए आपको समझने का और मौका मिला। जिस तरह से आपने पिछले 10 साल से इस सदन को चलाया, वह सराहनीय है। आपके मिजाज़ का, आपकी सोच का और जो आप पूरी जिन्दगी में डिप्लोमैट रहे, उसका भी आपको फायदा मिला। क्योंकि कोई पॉलिटिशियन होता है, तो वह आर-पार की बात करता है, लेकिन जो डिप्लोमैट होता है, वह दुश्मन को भी यह पता नहीं चलने देता है कि वह क्या फैसला करने वाला है, जिसका उल्लेख प्रधान मंत्री जी ने किया। तो उस डिप्लोमैसी से आपने इस सदन को चलाया। अपनी शराफत से, आपकी जो soft-spoken शैली है, भाषा है, ज़ुबान है, उससे आपने इस पार्लियामेंट को एक रौनक बख्शी। मैं आपको मुबारकबाद देता हूँ। अल्लाह आपको लम्बी उम्र दे। वह लम्बी उम्र के साथ, जैसी आज आपकी सेहत है, ऐसी ही सेहत दे। आप जो कुछ diplomatic career में नहीं कर पाये, अलग-अलग पदों पर रह कर नहीं कर पाये, Vice-President of India के तौर पर तो वह करना बिल्कुल ही असम्भव था, पब्लिक में जाना तथा दूसरी अन्य चीज़ें, जिनको आप जिन्दगी में करना चाहते हैं, मेरे ख्याल में उसका आपको मौका मिलेगा। मैं अपनी तरफ से और अपनी पार्टी की तरफ से आपका धन्यवाद करता हूँ और आपकी लम्बी उम्र की कामना करता हूँ, बहुत-बहुत शुक्रिया।

†**جناب غلام نبی آزاد:** کل تو نہیں، لیکن اگلے سیشن سے ان کے ساتھہ کام کرنے کا موقع ضرور ملے گا۔

سر، جتنے بھی چیئرمین کے ساتھہ مجھے کام کرنے کا موقع ملا، وہ بہت اچھے چیئرمین تھے، پھر چاہے کسی بھی پارٹی کے رہے ہوں۔ اس طرف کی پارٹی کے بھی تھے اور اس طرف کی پارٹی کے بھی تھے، لیکن سبھی کے ساتھہ میرے بہت مدھر سمبندھہ رہے، بھلے ہی وہ منتری کے روپ میں رہے یا عام ایم-پی- کے روپ میں رہے، لیکن میرے وپکش کے نیتا کے روپ میں آپ پہلے چیئرمین ہیں، جنہیں زیادہ نزدیک

† Transliteration in Urdu script.

[श्री गुलाम नबी आज़ाद]

سے جاننے کا موقع ملا۔ کیوں کہ ایم۔پی۔ کے طور پر اور منسٹر کے طور پر چیئرمین سے اتنا زیادہ سمبندھہ نہیں ہوتا ہے، ہاؤس میں ہی سمبندھہ رہتاہے، لیکن لیڈر آف دی ہاؤس اور لیڈر آف دی اپوزیشن، چیئرمین کے زیادہ کلوز رہتے ہیں، چاہے وہ کوئی چیئرمین ہوں، ڈپٹی چیئرمین ہوں یا چیئرپرسن ہوں۔ اس لئے آپ کو سمجھنے کا اور موقع ملا۔ جس طرح سے آپ نے پچھلے دس سال سے اس سدن کو چلایا، وہ سراہنئے ہے۔ آپ کے مزاج کا، آپ کی سوچ کا اور جو آپ پوری زندگی میں ڈپلومیٹ رہے، اس کا بھی آپ کو فائدہ ملا۔ کیوں کہ کوئی پولیٹیشئن ہوتا ہے، تو وہ آر-پار کی بات کرتا ہے، لیکن جو ڈپلومیٹ ہوتا ہے، وہ دشمن کو بھی یہ پتہ نہیں چلنے دیتا ہے کہ وہ کیا فیصلہ کرنے والا ہے، جس کا ا لّیکھہ پردھان منتری جی نے کیا۔ تو اس ڈپلومیسی سے آپ نے اس سدن کو چلایا۔ اپنی شرافت سے، آپ کی جو soft-spoken شیلی ہے، بھاشا ہے، زبان ہے، اس سے آپ نے اس پارلیمنٹ کو ایک رونق بخشی۔ میں آپ کو مبارکباد دیتا ہوں۔ للہ آپ کو لمبی عمر دے۔ وہ لمبی عمر کے ساتھہ، جیسی آج آپ کی صحت ہے، ایسی ہی صحت دے۔ آپ جو کچھہ diplomatic career میں نہیں کر پائے، الگ الگ عہدوں پر رہ کر نہیں کر پائے، Vice-President of India کے طور پر تو وہ کرنا بالکل ہی ناممکن تھا، پبلک میں جانا اور دوسری دیگر چیزیں، جن کو آپ زندگی میں کرنا چاہتے ہیں، میرے خیال میں اس کا آپ کو موقع ملے گا۔ میں اپنی طرف سے اور اپنی پارٹی کی طرف سے آپ کا دھنیواد کرتا ہوں اور آپ کی لمبی عمر کی کامنا کرتا ہوں، بہت بہت شکریہ۔

प्रो. राम गोपाल यादव (उत्तर प्रदेश): आदरणीय सभापति महोदय, एक लम्बे अरसे तक आपका मार्गदर्शन प्राप्त करने के बाद, आज जो घड़ी आयी है, उस पर मेरा ही नहीं, सारे लोगों का मन दुखी है, भारी है। नेता सदन ने, माननीय प्रधान मंत्री जी ने और नेता विरोधी दल ने आपके बारे में जो विचार व्यक्त किये, उनसे स्पष्ट है कि आप बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। आपने Ambassadors के रूप में काम किया होगा, अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी के वाइस-चांसलर के रूप में बहुत कठिन काम किया होगा, क्योंकि आज के युग में किसी वाइस-चांसलर का किसी युनिवर्सिटी को संभालना और discipline maintain करना बड़ा किठन काम होता है, लेकिन हमें यह लगता है कि इस सदन के चेयरमैन के रूप में आपने जो काम किया, उसमें सबसे ज्यादा मुश्किलें आपको आयी होंगी। मैंने डा. शंकर दयाल शर्मा से लेकर अब तक चेयर पर जितने भी माननीय सभापति बैठे हैं, उन सब के कार्यकाल को देखा है। मैं यह महसूस कर रहा हूँ कि इस सदन का जो कार्य करने का तरीका है, वह धीरे-धीरे उतना बेहतर नहीं रहा, जितना पहले था, इसलिए इस चेयर पर बैठने वाले व्यक्ति के सामने समस्याएँ ज्यादा आने लगीं, लेकिन उसके बावजूद आपके चेहरे की मुस्कुराहट हमेशा बरकरार रही। यह आपके व्यक्तित्व का एक बहुत ही

बढ़िया इशारा है। मुझे याद है कि जब मैं लोक सभा में था, तब एक दिन वहां पर बहुत ज्यादा अव्यवस्था होने पर दादा नाराज हो गए और उन्होंने कहा कि मैं तुम्हें श्राप देता हूँ कि अगली लोक सभा के चुनाव में आप सब चुनाव हार जाओ। हालांकि अगले दिन दादा ने हाउस में आकर वह श्राप वापस ले लिया। मैंने यहां उससे ज्यादा शोर-शराबा देखा, लेकिन आपने कभी किसी को डांटा भी नहीं। आपने सदैव कोशिश की कि सदन ठीक तरीके से चले। इस चेयर पर बैठने वालों से जो उम्मीदें की जाती हैं, इस चेयर के पीछे जो तराजू लगी हुई है, वह न्याय का प्रतीक है, आपने पूरी निष्पक्षता के साथ उस न्याय को किया। एक बात जो हम सदैव याद रखेंगे, वह यह कि आपने किसी बिल को डिन में पास करने की इजाजत नहीं दी। आपका निर्देश रहा कि डिप्टी चेयरमैन या जो भी यहां बैठे, वह किसी बिल को डिन में पास न कराए। यह आपका एक बड़ा काम है और मैं आने वाले दिनों में भी उम्मीद करूंगा कि इस परंपरा को कायम रखा जाएगा। मैं इस अवसर पर अपनी तरफ से और अपनी पार्टी की तरफ से यह कामना करता हूँ कि आपको लंबा जीवन मिले, आप स्वस्थ रहें, प्रसन्न रहें और लोगों के बीच आपको उसी तरह का सम्मान मिलता रहे, जैसा आज मिल रहा है, बहुत-बहुत धन्यवाद।

MR. CHAIRMAN: Thank you Ram Gopalji.

SHRI A. NAVANEETHAKRISHNAN (Tamil Nadu): I thank Mr. Chairman, hon. Prime Minister, hon. Leader of the House, hon. Leader of the Opposition, hon. leaders of various political parties and hon. Members of this House. First of all, I thank hon. Amma for giving me this opportunity. My English speech on this very important occasion is being purely prepared by me without being corrected by Amma. I know the importance of this function. Amma always wanted to convey it without any defect. I would like to convey to Mr. Chairman that our Amma was having high regards for him. She also instructed me to behave properly in this House and briefed that discipline is the most important character one must possess to be a Member of this House. Madam wanted me to get a good name from Mr. Chairman. I leave this to his judgment. I would like to draw the kind attention of this House to the fact that Mr. Chairman is the upholder of the rule of law. What is the difference between the rule of law and the rule of man? This is a million dollar question. It cannot be answered perfectly. But, as a student of law, I came to understand the difference between the rule of law and rule of man because it is the manner in which Mr. Chairman dealt with each and every Member without any discrimination, without any prejudice, without any malafide, without any bias. That is called the rule of law. I would also like to thank our hon. Prime Minister. I borrow a phrase from him, which he has used in his speech, namely, that Mr. Chairman is the custodian of Indian Constitution. I thank the hon. Prime Minister for that. You enforce the rule of law and, thus, uphold the Indian Constitution. I would like to submit that you are more judicious than any other judicially-trained personality. You conducted this House without any discrimination. I would also like

[Shri A. Navaneethakrishnan]
to submit that you are a versatile genius. I don't want to repeat what other Members have said. Further, I may be permitted to quote from one of your speeches which you delivered at Mangalore, which shows your real concern towards Indian people. I quote, "Our country faces many challenges of which none is bigger than poverty and unemployment." I repeat it, "Our country faces many challenges of which none is bigger than poverty and unemployment." Our Constitution does not guarantee employment. It only guarantees non-discrimination!" Whenever any employment opportunities are considered, similarly placed candidates shall not be discriminated. But, there is no guarantee for employment in our Constitution. From this speech, Sir, you have shown your real concern for our people's two problems, that is, poverty and unemployment. So, I thank the hon. Chairman and I would like to submit that you are really a good role model for each and every Indian citizen. So, I pray God to give you good health, long life; and once again I thank hon. Amma. Thank you.

MR. CHAIRMAN: Thank you, Navaneethakrishnanji.

SHRI DEREK O'BRIEN (WEST BENGAL): Mr. Chairman, Sir, before saying farewell to you today, I share with my colleagues in the House some of the things. They already know most of the things. I thought it would be my duty, may be, to share a few nuggets which many of us in the House may not know about you. For example, there is somebody who meets you in the morning, and his name is Mr. Akhil Thakur. He is a very important person in your life because he is your Yoga Teacher, who meets you every morning. So, we now know how you are so fit!

As a part of your routine, you also walk every evening. So, it is yoga and walk, and that is why you are still looking 60 when you are closer to 80. Sir, my colleagues here would also be surprised if I tell them that you haven't had lunch for the last 40 years because I know from very reliable sources that for the last 40 years all you have eaten for lunch are two sandwiches. This must be a world record. That is why you are looking so fit, Sir, because you have only sandwiches for lunch.

Does everybody know that the hon. Chairman of the Rajya Sabha and Vice-President of India was number five batsman and a top agile wicket-keeper who got the college cap? More on cricket, when you were the Ambassador to Iran, you introduced cricket to the staff of the Indian Embassy in Iran; and Iran, they say, is indebted to you because you started popularizing cricket there.

Some of us here are lovers of dogs. You are a wonderful dog lover because you have seven dogs at home; you must tell us the secret. ..(*Interruptions*).. After this ten-years' journey, you are moving on, but actually you and the new Vice-President

are walking across the road because you are going to 31, Dr. APJ Abdul Kalam Road, and he is coming across to your place. So, after all this, it is only going across the road. Sir, but on a more serious note, Ram Gopalji mentioned about one of your biggest achievements in the Rajya Sabha, "no Bill in the din". Sir, I end my term in a few days from now. What I have learnt from you and from what you have done for this House, I think is very meaningful and, on a more serious note, we need to place all these on record.

Sir, the first is that you said the Rajya Sabha would run from 11.00 a.m. to 6.00 p.m. Congratulations, Sir, for getting us all to work one extra hour everyday, and extending the time, which was earlier 5.00 p.m. to 6.00 p.m. Number two, Zero Hour never had a time-limit. It is you who set the time-limit to three minutes and, that is why, 15 of us can get a chance every day to express ourselves.

Another very important thing that you introduced was about Members ducking a question. If in the Question Hour, the Member, who put a question was not present, then Supplementaries would never be asked. But you came up with the move that even if the Member ducks his question, the answer is still laid on the Table of the House and someone else can ask Supplementaries. Sir, I think this is the smartest of all your moves here because now there is no way to duck a question.

And, of course, the most meaningful of them all, Sir, you gave a name to the morning meetings which we have at the back, and you called it the Tea Club. This gives a feeling of informality, a feeling of camaraderie and so on, and hence, we can share everything there. It doesn't matter if sometimes we say something there but come and do another thing here.

In conclusion, Sir, I can't but end by saying very proudly that you and many of my colleagues from my Party and myself, come from the same city. Sir, I know how deeply you love Kolkata. Your roots are in Kolkata. You went to St. Xavier's College, run by the Jesuits. And you know the motto of the College -- I went to the School; I didn't get into the College – which is 'Nihil Ultra', ' Nothing Beyond'. So, that is absolutely beautiful, Sir.

I have also noticed, Sir, that whenever you have a function, whether it is a book release, a farewell, or a welcome, you always have the right Urdu couplet to match the occasion. I remember, you quoted:–

"जुस्तजू है ज़िन्दगी, जोक़-ए-तालाब है ज़िन्दगी,
ज़िन्दगी का राज़ लेकिन दौर-ए-मंजिल में है।"

This is what you said was the motto that guided you. I got that translated for myself. It is wonderful, Sir!

[Shri Derek O’Brien]

Finally, I have only two things to say before I go. One is, we know you would be living in Delhi. Still, please come back home, come to Kolkata on holidays or even for longer periods of time. Sir, it is moments like these when there is a lot of sadness, melancholy and nostalgia. But, in all this, Sir, you had never lost your sense of humour. I remember what you told us last week in one of the ‘Tea Club’ meetings, -- and I thought self-deprecating humour is a great trait – when we had asked you how these ten years were, from the time you were 70 and now you are eighty, you said, “This is the best pension package anyone could ever get”. So, you are a great pensioner. And I am using your humour to tell everyone else that you must be an inspiration to all pensioners in this land.

Sir, thank you very much for inspiring so many of us, especially the newer ones like me and so many others who have come here. Thank you very much.

MR. CHAIRMAN: Thank you Derek.

श्री अली अनवर अंसारी (बिहार): चेयरमैन सर, आज से 10 साल क़ब्ल जब यहां आपकी ताजपोशी हो रही थी, तो मुझे भी चन्द शब्द बोलने का मौका मिला था। मैं अपने को रिकॉल कर रहा हूँ और उसमें से चन्द शब्दों को फिर से दोहराना चाहता हूँ। लोग कहते हैं कि नाम में क्या रखा है, लेकिन नाम में भी बहुत कुछ रखा है। आपका जो हामिद अंसारी नाम है, उसमें हामिद "हम्द" से बना है और अंसारी "अंसार" से बना है। इस प्रकार, आपके नाम से "हमदर्दी" और "मददगार" ध्वनियां निकलती हैं। और आज हम उसमें सिर्फ यही जोड़ना चाहते हैं कि आपने अक्षरशः अपने नाम को यहां जीया है और सही साबित किया है। देरेक ओब्राईन साहब कुछ शेरो-शायरी कर गए, तो हमारा भी इस मौके पर मन है।

"जाने उस शख्स को, कैसे यह हुनर आता है,

बातें कम करता है, और दिल में उतर जाता है।"

मैं एक आखिरी बात कह करके समाप्त करता हूं। मैंने महसूस किया है कि एक जो लीडर होता है, उसकी एक टीम होती है – वैसे तो पूरा सदन आपकी टीम है, सेक्रेटरिएट है, लेकिन सबसे ज्यादा वक्त और सारी बातें चेयरमैन और डिप्टी चेयरमैन शेयर करते हैं। जब जनाब कुरियन साहब आपकी जगह आसन पर होते थे, क्या गजब की ट्यूनिंग हम लोग देखते थे। हम लोगों को लगता था कि जैसे पवनसुत हनुमान गदा लेकर के वहां बैठे हुए हैं। भगवान राम ने जो पॉवर डेलीगेट की थी, उस delegated power के साथ यह जो समन्वय था, यह जो सामंजस्य था, यह विचित्र था। लीडर की यही खूबी होती है कि अपने को हमेशा लाइम लाइट में न रखे, अपने सबोर्डिनेट को भी रखे, दूसरी पीढ़ी का नेता भी पैदा करे। मैं आपके दीर्घायु जीवन की कामना करता हूं और हम सब लोग हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई — सब अगर आस्तिक हैं तो यह भरोसा है कि सब कुछ तय है कि कब मरना है, लेकिन जब तक आपकी हयात हो, आप सेहतमंद रहें और जिस तरह से आपने यहां से पूरे देश को एक मैसेज दिया हर मौके पर, बाहर भी रह करके वह काम करते रहेंगे। आखिर में मैं आपको अपनी तरफ से, अपनी पार्टी की

तरफ से दिल की बेइंतहा गहराइयों से आपका जो अगला जीवन है, उसके लिए खुश आमदीद कहता हूं और बधाई देता हूं। बहुत-बहुत शुक्रिया।

SHRI SITARAM YECHURY (West Bengal): Mr. Chairman, Sir, I find it very difficult to accept the conclusion that probably it is the last time I am addressing you as 'Mr. Chairman, Sir' and, with all the wits at my command, I can only share with you and this House that I am greatly honoured to have been here for the last one decade when you were the Chairman, when you had, in a difficult time, the unprecedented responsibility to serve as the Chairman for two consecutive terms. The only other person is the one whose portrait we have here in the Central Hall, Dr. Sarvepalli Radhakrishnan. You are part of that distinguished legacy of this House and our Country's history. I am honoured and I am at a total loss of words to express comprehensively what I feel about your contribution to this House. I think, Sir, one thing that you have contributed which I very gratefully acknowledge is to give this House a certain gravitas, that what we discuss here all our issues of substance and whatever be the acrimony, whatever be the differences, eventually we did come to very, very important conclusions, passed many legislations and you stood like a rock in defence of the rights of this House. The only regret I have, as you are leaving, is that we have not yet settled what control Rajya Sabha has over this complex called Parliament House and what is the role of the Rajya Sabha which you have tried for the last one decade. I hope, in the future, since I shall also, let me say, have the honour of leaving this House along with you, my colleagues here will continue to resolve this problem.

I personally recollect, when you assumed the Chair, there was a lot of apprehension, since you were not used to Parliamentary life. But, you had a very distinguished career which all my colleagues have spoken about. I do not want to repeat that. And, it was perceived that you may not be capable of really conducting such a difficult House. I remember, you were telling us at that time that 'everything and every institution in the country is run by rules. There are rules, according to which they will run and I shall just go by rules.' Then, I recollected the reputation you came here with. Apart from your glorious reputation as a career diplomat of the services that you had rendered to this country — as an intellectual, as a contributor in addressing various problems relating to human rights, the Kashmir issue, etc., — there was another reputation that you had and still have. You were known, as I was told, from the days of your Aligarh University student times, as the best umpire that Aligarh University has ever produced. Being a vivid cricketer and the best umpire in this House, I want to pay my respects that you have conducted the proceedings of the House in a meticulous fashion according to rules. Yes; we have had disagreements. I remember, standing from here, asking you, at the midnight of

[Shri Sitaram Yechury]

31st August, as to what are you going to do when the clock strikes 12 o'clock at midnight. There was no answer. We all knew what would happen to the Lokpal Bill which was to be passed. And, eventually, you adjourned the House. We were bitterly upset. And, unfortunately, we do not have Lokpal even today! That is a different point. But, at that time, we had our differences. But, your contribution, Sir, I think, must be placed on record.

The first one is this. I had also proposed this; but, till the Chair agrees nothing can materialize. It is about shifting of the Question Hour. I think, this really made this House more productive in terms of the number of questions being answered, keeping the Executive accountable to Parliament and also giving all of us a chance for that one hour in the morning to raise issues of public importance through the Zero Hour. It virtually has become a mandatory one hour everyday now. It is very good, because it gives an opportunity for Members to reflect on the real conditions of the people and that of the country.

The second thing, which my colleague, Ram Gopalji, has mentioned is about your insistence that no legislation can be passed in the din. It is something which really has contributed to add substance to this House. I only wish your successor and the House, in future, will continue with this principle that the Rajya Sabha will not allow any legislation to be passed when the House is not in order. It is something that we should all adhere to.

The other contribution of yours which I wish to mention is on the question of the Rajya Sabha Television. You recollect, when this discussion came out, I was, initially, of the opinion, 'why should there be two TV channels -- Lok Sabha and Rajya Sabha?' We should have one Parliament channel for the Lok Sabha and the Rajya Sabha. But, I am so glad that you had overruled my opinion. I am very happy that my position was rejected and you have Rajya Sabha Television today which, I think, has contributed immensely for developing the consciousness that is required of our younger generation on how our democracy works and how our Constitution evolved. One of our former colleagues in this House, Shri Shyam Benegal, produced a monumental series called Samvidhaan. A very few, even of my generation, would know of all the debates and struggles that went in creating this wonderful document called the Indian Constitution. There are very many weaknesses which we need to correct. But, we need to uphold the strengths. I think, this is a great contribution. We have seen the trial of a slogan that used to rouse a degree of patriotism in all of us, of my generation — Sahgal, Dhillon and Shanawaz — the INA trials. And, that has been documented today, as a part of our people’s struggle for Independence, which,

I think, is a very big contribution that the Rajya Sabha T.V. has made. So, thank you for steering that Channel in this manner. But, I would also like to add that it also had a flavour of culture and a certain, what are called, invisibles of culture. I am talking of the Hindi film industry, the Hindi songs, and various episodes that the Rajya Sabha T.V. shows, because after all, whether we accept it or not, most of us have grown up listening to the Hindi songs, shaping our consciousness. That is the Indian reality. We had illiterate people who could not read, but the philosophy was given to them through the songs. I remember a programme on Shailendra -- person who unfortunately committed suicide -- who had written some wonderful lyrics for Raj Kapoor and for Shankar Jaikishan. One of his songs was:

"जिंदा है, तो जिंदगी की जीत में यकीन कर,
अगर कहीं है स्वर्ग, तो उतार ला जमीन पर।"

And, that is what your Chairmanship has actually taught most of us. I would like to thank you very much for that. There is so much more that I would like to say. But, as you retire and as you go into a life – you have long been looking forward to – of writing, of introspecting, I would request you to continue to share your wisdom with us. Along with you, I would like to thank the entire staff also who have worked with you for the last ten years. I would also like to thank those who have actually been taking care of us, if I get a chance to bid farewell to this House subsequently. Now, we are only bidding farewell to you. But, I would only like to say, please continue to spread your wisdom. And if there is anything, I will only end by saying that anything which I have learnt personally – personally – is what Shakespeare has said most eloquently, and you would probably know of that passage better than I do, Polonius had advised his son, – Dr. Karan Singh is already ready to help me – and in the final two sentences, he says, "This above all: to thine own self be true, And it must follow, as the night the day, Thou shall do no harm to no man." So, that is it. And, we have had ideological differences, we will continue to have. But, we have a certain commitment and a commonness in terms of building a better India for ourselves and for our future. And, that better India can only happen if all of us are true to our ownselves.

Thank you very much for reemphasizing that wisdom and I only wish that you continue to share your wisdom with all of us and the country, after you leave this august House and this august Office. And, in your private life, you will be able to make these contributions, I think, in as effective a way, as you have been making while you are in Chair. Thank you, Sir. Thank you very much.

श्री दिलीप कुमार तिर्की (ओडिशा) : आदरणीय सभापति जी, आज हम सब के लिए उदासी का दिन है। हमारे चेयरमैन साहब और माननीय उपराष्ट्रपति जी, 10 साल का सफर पूरा करने

[श्री दिलीप कुमार तिर्की]

के बाद रिटायर हो रहे हैं, लेकिन उदासी के साथ-साथ खुशी का दिन है कि आप जिस पद से रिटायर हो रहे हैं, आपने उसकी गरिमा को और आगे बढ़ाया है। आपने अनेक महत्वपूर्ण पदों पर देश की सेवा की है। आप विदेश में भारत के राजदूत भी रहे हैं, अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के वाइस-चांसलर रहे हैं, National Minorities Commission के चेयरमैन रहे हैं और देश के इतिहास में सिर्फ दूसरे ऐसे व्यक्ति हैं, जिन्होंने उपराष्ट्रपति के रूप में दो टर्म संभाली हैं। मैंने पिछले पांच सालों में आप से बहुत कुछ सीखा है। आप हमें हाउस में हमेशा प्रोत्साहन देते रहे हैं। इतना ही नहीं, इस सदन में जो भी नए मेम्बर चुनकर आते हैं, आप से हमेशा उनको सपोर्ट मिलता है। मुझे आपके साथ नाइजीरिया और माले के दौरे पर जाने का मौका मिला है। मैंने वहां भी आप से काफी कुछ सीखा। पूरे सदन को मालूम है कि आप स्पोर्ट्स को कितना बढ़ावा देते हैं, जैसा कि अभी हमारे साथी श्री देरेक ओब्राईन जी ने कहा है कि आप स्वयं गोल्फ और क्रिकेट खेलते हैं और स्पोर्ट्स में रुचि भी रखते हैं। हम लोगों ने ओडिशा में पिछले साल जब Tribal Youth के लिए 1,400 टीमों के लिए हॉकी चैम्पियनशिप ऑर्गेनाइज़ की थी, तब आप संसद सत्र के बिज़ी शैड्यूल में से अपना समय निकालकर, हमारे Tribal Youth के लोगों को पॉज़िटिव मैसेज देने के लिए चीफ गेस्ट के रूप में आए थे। आपके आने से Tribal Youth के लोग काफी उत्साहित हुए थे। संसद के बाहर भी आप समाज के वीकर सेक्शन के बारे में कहते रहते हैं और हमेशा उनके बारे में सोचते रहते हैं। मैं अपनी तथा अपनी पार्टी बीजेडी और अपने मुख्य मंत्री श्री नवीन पटनायक जी की ओर से आपको इस अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं और आपके अच्छे स्वास्थ्य की कामना करता हूं। मैं उम्मीद करता हूं कि हम सबको और देश को आगे भी आपकी गाइडेंस मिलती रहेगी। हम आपको सदन में मिस करेंगे, धन्यवाद।

MR. CHAIRMAN: Thank you, Tirkeyji.

SHRI C. M. RAMESH (Telangana): Mr. Chairman, Sir, we have so many tall leaders in this House. They would have seen many Chairmen, but for the last six years, I am seeing only you, Sir. On behalf of my Party and my Leader, Shri Chandrababu Naidu, I have high regards for you. At the time of bifurcation of Andhra Pradesh, the day when the Bill was to be introduced, I took papers from the Secretary-General. On that day, you were there in the Chair, Sir. You said, "I am going to suspend this Member." Then, I came to you and explained my situation. Then you said, "Go and apologise to the House." Then, I came here. You understood my situation very well, Sir. For that, once again, I thank you. Sir, I have learnt a lot of discipline from you. When the Session is there, I used to come to the Leaders' meeting. Even there, you maintain discipline, Sir. You ask us to speak only on the subject. If someone speaks on some other subject, you say, "Don't deviate from the subject. Speak only on the subject." I have learnt many things from you. We will miss you, Sir. Again, I thank you very much and congratulate you.

MR. CHAIRMAN: Thank you very much.

12.00 P.M.

श्री वीर सिंह (उत्तर प्रदेश): सभापति महोदय, आज हम 10 साल के अंतराल के बाद सदन में आपकी विदाई कर रहे हैं। आपकी 10 सालों की यादें हमेशा इस सदन से जुड़ी रहेंगी। आदरणीय बहन कुमारी मायावती जी के आशीर्वाद से मुझे भी आपके मार्गदर्शन में 10 सालों तक काम करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। आपने सत्ता पक्ष को, विपक्ष को और बीच में बैठे हुए सभी लोगों को सुना तथा सबको समय दिया। आपने विभिन्न पदों पर रहकर, उप राष्ट्रपति के रूप में और इस सदन में चेयरमैन के रूप में देश की सेवा की है। आपने इस सदन में भारतीय संविधान की गरिमा को देखकर, बहुत अच्छे निर्णय लेने का कार्य किया है। आपके अंदर "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना ओत-प्रोत रही। जब कभी भी देश हित में, जन हित में प्रश्न काल के अंदर कोई प्रश्न किसी सदस्य के द्वारा इस सदन में लाया गया, आपने उसको बोलने का पूरा मौका दिया, आपने सभी को पूरा सुना भी। जब तक उस प्रश्न पर संतुष्टि नहीं हो गई, तब तक आप कार्यवाही के लिए आगे नहीं बढ़े। आपने सबको पूरा समय दिया। इसके साथ-साथ आप एक अच्छे खिलाड़ी भी रहे। आपने अलीगढ़ युनिवर्सिटी में रहकर पूरे देश में अलीगढ़ियन स्टूडेंट्स तैयार करके भेजे। आपका नाम युनिवर्सिटी के उन शिक्षकों में आता है। मैं ईश्वर से यही कामना करूंगा कि आपका आगे का जो समय है, वह बहुत अच्छा रहे, आपका स्वास्थ्य ठीक बना रहे, आप स्वस्थ रहें।

सभापति जी, आप एक लेखक भी हैं, इसलिए मेरी ऐसी मनोकामना है कि आप अपनी लेखनी के माध्यम से गरीबों को, इस देश में रहने वाले लोगों को फायदा पहुंचाएंगे। मैं ईश्वर से ऐसी कामना करते हुए अपनी तरफ से और अपनी पार्टी, बहुजन समाज पार्टी की तरफ से आपको बधाई देता हूं, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

MR. CHAIRMAN: Thank you.

श्री नरेश अग्रवाल: सभापति जी, 12 बज गए हैं, क्वेश्चन ऑवर?

MR. CHAIRMAN: No point of order. ...(*Interruptions*)...

श्री माजीद मेमन (महाराष्ट्र): सभापति जी, मैं आपके सामने यह कहने जा रहा था कि मुझ से पहले बहुत सारे सदस्यों ने आपकी जिदगी के बारे में, आपकी सेहत के बारे में, आपकी कार्य शैली के बारे में बहुत कुछ बता दिया है, इसलिए उन्हें repeat करने की जरूरत नहीं है। समय कम है, मगर मुझे आपके संबंध में कुछ खास बातें कहनी हैं। एक बात तो यह कहनी है कि अभी, जैसे आपने जो प्वाइंट ऑफ ऑर्डर कहा, तो मैं पिछले चार वर्षों से यहां देख रहा हूं कि यह काम इतना कठिन है, it is no easy task to run this House, more particularly, when there are Members – giants on this side, giants on that side – and they would always corner the Chair by flouting Rules Book or by flouting Constitution of India. At times, I have occasion to witness that 'point of order' becomes the cause of disorder and there has been disruption and the Chairman finds it extremely difficult. The person on the Chair has an extremely difficult job. Managing small kids in a primary school or a kindergarten may not be as difficult as it is to manage the Members here on both sides. Therefore, tremendous amount of patience is required to be shown, tremendous amount of restraint, tolerance is required to be displayed by the Chair, which was successfully done by the hon. Chairman for all these years.

[श्री माजीद मेमन]

Sir, your vast experience and your scholarly abilities indeed enhanced the dignity and quality of performance as the Chairman of this august House for the past one decade. Everybody has spoken about your performance and discharge of duties as the Chairman of this House because we are concerned with this House and we are bidding you farewell. But as the Vice-President of India as well, you have conducted yourself with utmost dignity and you have enhanced the prestige of our country throughout the world. I am glad that we had a scholarly Vice-President for all these years and, as the Chair, of course, I have had the occasion to interact with you everyday even in the Tea Club.

सभापति जी, सेहत के बारे में अभी हमारे किसी मित्र ने आपके बारे में कुछ कहा था। मैं एक छोटा-सा वाक़या बताता हूं कि अभी कुछ महीने पहले दिल्ली के एक फंक्शन में शरद पवार जी मेरे साथ बैठे थे और आपको पुकारा गया था। Compere ने कहा, "The Hon. Vice-President, please come on the stage." स्टेज पर चढ़ने की सात-आठ सीढ़ियां थीं, हम आपको देख रहे थे, आप अपनी जगह से उठे और लपककर, दौड़ते हुए सीढ़ियां चढ़ते हुए ऊपर पहुँच गए। तब शरद पवार जी ने मुझ से पूछा कि इनकी उम्र क्या है और इनकी सेहत का राज़ क्या है? मैंने कहा कि मैं उनसे यह पूछने की ज़ुर्रत नहीं कर सकता कि आपकी सेहत का राज़ क्या है, लेकिन जैसा मैं देख रहा हूं, उसके मुताबिक उन्होंने अपने वजन को जो बरकरार रखा हुआ है, तब यकीनी तौर पर वे योग करते होंगे, यकीनी तौर पर अपनी सेहत का ख्याल रखते होंगे, क्योंकि वजन कम होने से इंसान बहुत फुर्ती से चल पाता है। हमने आप में जो देखा है, वह मुझे बताया गया है। देरेक ओब्राईन जी ने आपको compliment देते हुए आपकी उम्र दस साल घटा दी है। मैं समझता हूं कि आने वाले दिनों में आप इस हाउस से रुख़सत जरूर हो जाएंगे, जाते हुए शायद आप यह कहेंगे, जैसा कि ग़ालिब ने कहा है...

"जाते हुए कहते हो कि कयामत में मिलेंगे।

गोया कि कयामत का भी है कोई दिन और।"

सर, आपको हम मिस करेंगे। आप यहां नहीं होंगे, यह हमारे लिए एक बड़ा लॉस होगा। यहां लोग बड़ी तारीफ और खुशी के गीत गा रहे हैं, मगर इनके दिल अंदर से दुखी हैं कि एक ऐसा व्यक्ति, जिसने हमें इतना प्यार दिया, जिसने एक टीचर की तरह हमें पढ़ाया-सिखाया, बहुत कुछ बताया, हमें कायदे बताए, कानून बताए, तरीका बताया कि किस तरह से पुरअमन तरीके से हाउस को चलाया जाए — एक ऐसे व्यक्ति को खो देना हमारे लिए एक बहुत बड़ा लॉस है। जिंदगी के crossrpads पर कई ऐसे मुकाम आते हैं, जहां हम अपने करीबी लोगों को खो देते हैं, वे चले जाते हैं। आप यहां से जा रहे हैं, मगर मुझे उम्मीद है, पूरी उम्मीद है कि आपकी एक्टिविटीज़ बरकरार रहेंगी और आपकी अच्छी सेहत आपको इस बात की इजाज़त देगी। आप वाइस प्रेसिडेंट न रहें, चेयरमैन न रहें, उसके बावजूद भी मुझे पूरा विश्वास है, मैं यकीन से कह सकता हूँ कि आने वाले दिनों में आप मुल्क, कौम और समाज के लिए एक बहुत बड़े एसेट रहेंगे और आपका जो परफोरमेंस होगा, वह मुल्क के लिए बहुत जरूरी होगा – आप गाइड करेंगे, आप राह बताएंगे, आप मार्गदर्शन करते रहेंगे।

सर, हमारी तरफ से, नेशनलिस्ट कांग्रेस पार्टी के तमाम ऑफिस बीयरर्स, कार्यकर्ताओं, सांसदों, विधायकों की तरफ से और शरद पवार जी की तरफ से मैं आपको मुबारकवाद देता हूँ, on accomplishing this job in an excellent manner and leaving behind fond memories of a great Chairman that this House had.

Thank you very much.

MR. CHAIRMAN: Thank you, Majeed Sahab.

SHRI TIRUCHI SIVA (Tamil Nadu): Mr. Chairman, Sir, howsoever old we may grow, some things are really hard. One such thing is bidding farewell, that too, to a person like you with whom we have been associated for a decade.

Sir, I had the privilege of being a Member of this House the whole of your tenure. I also have the special privilege of serving as one among the panel of Vice-Chairmen, a privilege that you gave me. Your eloquence and strong vocabulary have impressed us many a time. I would like to point out one example here. During the Question Hour, when lengthy supplementary questions were being put by Members, you said that a supplementary question is only a window and not an elephant gate. There are many such examples. You were inclusive, accommodative and, as many other Members here pointed out, rotated supplementary questions among Members, so that attention is not focussed just on the right side or the left side. You also looked towards the back-benchers, which is a special quality of yours for which we are very thankful.

Sir, there were two historical occasions when you were in the Chair – one, while passing the Women's Reservation Bill and the other, during the first ever Impeachment Motion against a High Court Judge, which was moved by Shri Sitaram Yechury. In that debate, the then Leader of the Opposition, and now the Leader of the House, established how big and talented an Advocate he is, because he tilted the whole of that debate. We can never forget those two occasions. Even outside the House, in all the seminars and conferences that you have participated, you have been very outspoken. You are concerned about the whole country. You said that nowadays, most editors are just employees, which conveyed a lot. For bigger issues, you have given very simple solutions. We have been impressed many a time by you. Many Members here focussed on various dimensions of yours. We know you as the Chairman of this House. You were quoted here as a cricketer, as an academician, as a Vice-Chancellor, as a Diplomat and various other things. But, I would like to focus on you as an individual. I had the opportunity to travel abroad with you, to the Czech Republic and Croatia, where I got to see a different dimension of your personality. The magnanimity you showed, the humility and tolerance you displayed are hard

[Shri Tiruchi Siva]
to describe, but, Sir, we learnt a lot from you. It won't be an exaggeration when I say – and I think everyone here would agree – that you contributed significantly to the sanctity and the glory of this Chair.

Sir, this is unusual for me, but today I learnt something from some of my North Indian colleagues, and I would like to say it here. "कभी अलविदा न कहना।"

Thank you very much, Sir.

MR. CHAIRMAN: Thank you, Tiruchi Sivaji.

श्री संजय राउत (महाराष्ट्र): चेयरमैन सर, मैं इतना ही कहूँगा कि हम सब लोग आपको बहुत miss करेंगे और जिसे हम बेहद प्यार करते हैं, सम्मान करते हैं, उसको ही miss करते हैं। 10 साल का आपका कार्यकाल हमने बहुत नजदीक से देखा है।

आपका जो पूरा कार्यकाल है, वह राष्ट्र को समर्पित रहा। हमेशा आपकी भूमिका एक संयमित, एक balanced विचारों वाली रही है। मैं आपका बहुत आभारी हूँ कि आपने इस सदन की प्रतिष्ठा और गौरवशाली परंपरा कायम रखने का कार्य किया है। आपका कार्यकाल बेमिसाल रहा। मैंने देखा कि आप हमेशा impartial रहे, आपने नियम और कानून को तोड़ने नहीं दिया। इस सदन में दोनों तरफ इतने कायदे आज़म बैठे हैं, यहां और वहां, कानून तोड़ने में वे लोग ज्यादा माहिर होते हैं, लेकिन आपने ऐसे बड़े-बड़े वकीलों को भी कानून नहीं तोड़ने दिया। जब ऐसा मौका आया, तो आपने सदन में उपराष्ट्रपति का शासन लगा दिया और आपने यहां law and order maintain रखने की भूमिका रखी है।

सर, आपने हमेशा यहां जो नए मेम्बर्स आए हैं, उनके अधिकारों की रक्षा की है। यह सदन चलाना कोई आसान काम नहीं है। यहां कभी तांडव होगा, तो तांडव में किसकी बलि जाएगी, आप बता नहीं सकते, लेकिन आपकी शराफत उसके ऊपर भारी रही।

सर, आपने हमें कभी ज्यादा समय बोलने का मौका नहीं दिया, लेकिन मैं आपसे इतना ही कहूँगा कि आप यहां से विदाई ले रहे हैं, लेकिन सार्वजनिक जीवन से कोई विदाई नहीं लेता। हमें आपका मार्गदर्शन हमेशा मिलता रहेगा। आप लेखक हैं, आप वक्ता हैं और इस देश को हमेशा सुनने और पढ़ने की बहुत इच्छा रहती है।

आपने हमारे लिए एक विरासत छोड़ी है और वह है – राज्य सभा टीवी। इस देश में आज जो चैनल्स चल रहे हैं, उनमें नंबर एक चैनल राज्य सभा टीवी है और यह आपकी विरासत है। इतना impartial, इतना informative चैनल मैंने पूरे विश्व में नहीं देखा है। जब यहां दिल्ली में बच्चे UPSC की तैयारी के लिए पढ़ने के लिए आते हैं, National Talent Search Exam के लिए आते हैं, तो मैं उनसे पूछता हूँ कि आप क्या पढ़ते हो, क्या देखते हो, तो लगभग सभी स्टूडेंट्स ने मुझसे कहा कि मैं हमेशा राज्य सभा टीवी देखता हूँ, watch करता हूँ, follow करता हूँ, यह बहुत informative channel है और उससे हमें exam में बहुत फायदा होता है। सर, यह आपकी विरासत है। मुझे लगता है कि यह हम सबकी जिम्मेदारी है कि यह विरासत हम सब आगे लेकर जाएँ।

मैं आपके आने वाले जीवन के लिए आपको शुभकामनाएँ देता हूँ। आपकी सेहत हमेशा ठीक रहे तथा हम सबको और देश को आपका मार्गदर्शन मिलता रहे। धन्यवाद।

SHRI NARESH GUJRAL (Punjab): Sir, as you prepare to demit the high office of the Chairman of this House, you leave behind scores of admirers on all sides of the House. We shall miss your sagacity, your scholarship, your sense of fair play, your patience and, above all, your total commitment to secular values of this country. Sir, you have never been afraid to call a spade a spade, and that is one quality of yours which we admire because at times, you have annoyed the ruling party of the day, yet accommodated the voice which needs to be heard. I shall never forget that you were the person, you were the Chairman, who allowed 1984 to be discussed in this House. For years, there was a clamour to discuss 1984, yet this House would not take it up. And, after you allowed that discussion, it was also taken up in the Lok Sabha. Similarly, when it came to the Gurudwara Bill, at a short notice, you allowed the Bill to be tabled and then, fortunately, it was passed without discussion. So, as far as Punjabis are concerned, and every Sikh in this country is concerned, they owe you a debt of gratitude.

Sir, for me, you have been like an elder brother or a father. I remember only once when I entered the Well of this House and you called me to your Chamber and you reprimanded me, and I learnt a lesson of my life. I shall never forget that.

Sir, also, you gave small parties and independents a voice in this House. We were always asking for time, but we never got time. You recognised our independent group and today, at least, we have a voice.

Sir, normally, this Chair lends dignity to the person who occupies it, but in your case, it is the other way round. I am sure that in the years to come, the nation will always hear your voice with a lot of respect and reverence. Sir, on my behalf, and on behalf of my Party, I wish you good health and many, many years in the service of the nation. Thank you very much, Sir.

MR. CHAIRMAN: Thank you, Nareshji.

श्री नज़ीर अहमद लवाय (जम्मू और कश्मीर)ः चेयरमैन सर, मैं जम्मू-कश्मीर स्टेट से हूं। यहां हमारे सब सीनियर पार्लियामेंटेरियन बैठे हैं, जिन्होंने बोला है। मैं जम्मू कश्मीर की तरफ से एक जूनियर मेम्बर हूं और पिछले दो सालों से आप सबको देख रहा हूं। जब मुझे अपने अज़ीम रहनुमा मुफ्ती मोहम्मद सईद साहब ने यहां भेजा, तो मैंने उनसे पूछा कि मुफ्ती साहब, मुझे पार्लियामेंट में क्या करना है, मैं तो स्टेट में काम करना चाहता हूं? उन्होंने जो मुझसे कहा, मेरे कान में आज भी उनकी वह आवाज़ गूंज रही हैं। उन्होंने बुलाकर मुझसे कहा कि जहां पर आपको जाना है, वहां चेयरमैन साहब, हमारे हामिद अंसारी साहब हैं, आपको वहां जाना है और वहां से सीख कर वापस अपनी स्टेट में आना है। मुझे इन चीज़ों का फ़ख़्र है कि पिछले दो सालों में

[श्री नज़ीर अहमद लवाय]

मैंने आपसे जो सीखा है, उसको मैं जिन्दगी भर याद रखूंगा और इंशाअल्लाह कोशिश करूंगा कि हमारा जो आने वाला कल है, उसमें मैं सबको यह बता सकूं।

चेयरमैन साहब, मैं जम्मू-कश्मीर स्टेट की तरफ से और अपनी सरकार की तरफ से आपको शुभकामनाएं देता हूं। मुझे फ़ख़्र है कि आपके चेयरमैन होने के समय में मुझे इस पार्लियामेंट में कुछ चीज़ें सीखने का मौका मिला। मैं आपकी सेहत के लिए इंशाअल्लाह दुआ करूंगा। यह जो सारे हिन्दुस्तान की पार्लियामेंट है, इस पार्लियामेंट में, इस डेमोक्रैटिक कंट्री में मैंने एक खूबी देखी है कि यहां हरेक मज़हब का आदमी, चाहे मुस्लिम है, सिख है या हिन्दू है, इस चेयर पर काम कर सकता है, यहां की अवाम के लिए काम कर सकता है। मुझे इस चीज़ का फ़ख़्र है। मैं कहना चाहूंगा कि पिछले दो सालों से मैंने यही देखा है कि चेयर को चलाना बहुत ही मुश्किल काम है। लास्ट में आपके लिए मैं एक शेर अर्ज करूंगाः—

'दार-ओ-रसन को किसने चुना, देखते चले ।

ये सर बुलंद कौन हुआ, देखते चले।।''

शुक्रिया, धन्यवाद।

†جناب نزیر احمد لوائے (جموں و کشمیر): چئیرمین سر، میں جموں وکشمیر اسٹیٹ سے ہوں۔ یہاں ہمارے سب سینئیر پارلیمنٹیرین بیٹھے ہیں، جنہوں نے بولا ہے۔ میں جموں وکشمیر کی طرف سے ایک جونئیر ممبر ہوں اور پچھلے دو سالوں سے اپ سب کو دیکھ رہا ہوں۔ جب مجھے اپنے عظیم رہنما مفتی محمد سعید صاحب نے یہاں بھیجا، تو میں نے ان سے پوچھا کہ مفتی صاحب، مجھے پارلیمنٹ میں کیا کرنا ہے، میں تو اسٹیٹ میں کام کرنا چاہتا ہوں؟ انہوں نے جو مجھ سے کہا، میرے کان میں اج بھی ان کی وہ آ واز گونج رہی ہے۔ انہوں نے بلاکر مجھ سے کہا کہ جہاں پر اپ کو جانا ہے، وہاں چئیرمین، ہمارے حامد انصاری صاحب ہیں، آپ کو وہاں جانا ہے اور وہاں سے سیکھ کر واپس اپنی اسٹیٹ میں آنا ہے۔ مجھے ان چیزوں کا فخر ہے کہ پچھلے دو سالوں میں میں نے آپ سے جو سیکھا ہے، اس کو میں زندگی بھر یاد رکھونگا اور انشاءاللہ کوشش کرونگا کہ ہمارا جو آنے والا کل ہے، اسمیں میں سب کو یہ بتاسکوں۔

چئیرمین صاحب، میں جموں وکشمیر اسٹیٹ کی طرف سے اور اپنی سرکار کی طرف سے اپ کو شُبھ کامنائیں دیتا ہوں۔ مجھے فخر ہے کہ اپ کے چئیرمین ہونے کے وقت میں مجھے اس پارلیمنٹ میں کچھ چیزیں سیکھنے کا موقع ملا۔ میں آ پ کی صحت کے لیے انشألله دعا کرونگا۔ یہ جو سارے ہندستان کی پارلیمنٹ ہے، اس پارلیمنٹ میں،

† Transliteration in Urdu script.

،اس ڈیموکریٹک کنٹری میں میں نے ایک خوبی دیکھی ہے کہ یہاں ہرایک مذہب کا ادمی چاہے مسلم ہے، سکھ ہے یا ہندو ہے، اس چئیر پر کام کرسکتا ہے، یہاں کی عوام کے لیے کام کرسکتا ہے۔ مجھے اس چیز کا فخر ہے۔ میں کہنا چاہونگا کہ پچھلے دو سالوں سے میں نے یہی دیکھا ہے کہ چئیر کو چلانا بہت ہی مشکل کام ہے۔ لاسٹ میں اپ کے ے لیے میں ایک شعر عرض کرونگا

دار و رسن کو کسنے چنا، دیکھتے چلیں
یہ سر بلند کون ہوا، دیکھتے چلیں

شکریہ، دھنیواد۔

SHRI D. RAJA (Tamil Nadu): Respected and beloved Chairman, I had the privilege to welcome you when you were elected as the Vice-President of this country and the Chairman of this House. Since then, I had the privilege of working with you for a decade. The decade was very turbulent in the political life of our country. But, Sir, I can proudly call you a great reformer. The reforms, which you introduced, with regard to the Zero Hour, the Question Hour, the Calling Attention Motion, are all very significant and Rajya Sabha will forever remember those reforms. Sir, the way you defended the rights of the Rajya Sabha and the categorical position which you have taken that no Bill to be passed in the din, are very significant for the entire Rajya Sabha's history and Rajya Sabha will remember all these things.

Sir, I would like to touch upon two things. One, the way you related to the realities of the country are excellent and we learnt a great deal of things from you. Sir, the Leader of the House, our very respected Finance Minister, Shri Arun Jaitley, spoke regarding the word 'anarchist', the way it was used in the House, how it was taken up and how it was understood. In the same way, I would like to refer to the word 'genocide', which I used while referring to the killings of the Sri Lankan Tamils. I used that word for the first time. It was expunged and it was said that it was an unparliamentary word. But I went on repeating, and, finally, it was accepted and it is on the record. But in one of the formal meetings in your Chamber, with all your rich experience, you said, 'genocide' is a word accepted internationally, and there is nothing unparliamentary in that word as such. That is what you said. That is one thing, which I will remember forever.

The other thing is an informal one. When there was some turmoil in the JNU, my daughter wrote an article in the Indian Express, 'Even the Walls speak politics'. Then, while appreciating that article for that insight, you told me that there used to be a joke during your time that if someone goes to Jawaharlal Nehru University,

[Shri D. Raja]

one should not stand for long time at one place, otherwise, somebody will come and put a poster on you. That is what you told me informally. I understand what is the academic life, what is the campus life, what is the meaning of freedom of expression, and freedom of thought. These are the two things which I will remember. Sir, we learnt a lot from you. Now, you are demitting your office but we will be looking forward to your wisdom. You are one of the very enlightened citizens of this country, one of the finest citizens of this country. I am not talking about scholarship. I am talking about your commitment to the country and its people, and your integrity for the country and its values.

Sir, the issues which you have been raising, the concerns you are expressing, they are our issues, they are our concerns, and, we will be looking forward to get your guidance and valuable advice in the coming days. With these words, on behalf of my party, the CPI and on my personal behalf, I extend you best wishes for the future. We will continue to interact, we will continue to work together in the best interests of our country and its people. Thank you.

MR. CHAIRMAN: Thank you, Mr. Raja.

DR. KARAN SINGH (NCT of Delhi): Mr. Chairman, Sir, your great achievements have already been mentioned by everybody. I am not going to repeat them. I am standing here simply because there have been so many beautiful urdu shers, I would like to say a Sanskrit couplet because without Sanskrit, your departure will not be complete. It is an aashirwad. Sir, you are on a higher Chair but I am older than you. So, I have the right to give you aashirwad.

"स्वस्त्यस्तु ते कुशलमस्तु चिरायुरस्तु, गोहस्तिवाजिधनधान्यसमृद्धिरस्तु।

ऐश्वर्यमस्तु विजयोऽस्तु रिपुक्षयोऽस्तु कल्याणमस्तु सततं हरिभक्तिरस्तु।

MR. CHAIRMAN: Thank you.

DR. MANMOHAN SINGH (Assam): Hon. Chairman, Sir, on an occasion like this, when we bid farewell to you as the Chairman of this august House, my thoughts go back to the days when you were first elected as the Vice-President and the Chairman of this House. As Prime Minister of India, I received maximum possible guidance and cooperation from you. For me, Mr. Chairman, you have been a friend, philosopher and guide. I often wonder what it is that keeps this vast country of ours, with this vast diversity, moving forward. Then I am reminded of a couplet by Iqbal.

"मिट गये मिस्त्र, यूनान-ओ-रूमा,
लेकिन कायम है अब तक, नाम-ओ-निशां हमारा।
कुछ बात है कि हस्ती, मिटती नहीं हमारी,
सदियों रहा है दुश्मन, दौर-ए-ज़मां हमारा।।"

When I reflect on India's history, the tensions and the challenges that our country face from time to time and yet it keeps on going, progressing from moment to moment, I find it is largely because people like you having great statesmanship have guided this country in various capacities from time to time. I would not like to say more than that. I would say that we all wish you good health. And I conclude with a couplet.

"तुम जिन्दा रहो हज़ार वर्ष, हर वर्ष के दिन हों पचास हज़ार।"

MR. CHAIRMAN: Thank you, Dr. sahib. Thank you very much.

श्री आनंद भास्कर रापोलू (तेलंगाना)ः महामहिम उपराष्ट्रपति महोदय, my beloved Chairman, let me quote the Gita.

"यद्यदाचरित श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः। स यत्पमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते।।"

The nobles will lay the path, the rest will follow the way. While demiting the office of the Vice-President of India and Chairman of the Rajya Sabha, you have laid high standards which are to be maintained in the coming times. I am considered by my friends as the blue-eyed boy of your kind consideration as I used to get several chances of raising supplementary questions. Recently, at the end of the Session, in your concluding remarks, you mentioned the important role of the backbenches in enriching the quality of debates of the House. Being a Member of the Rules Committee chaired by you, you gave me a chance to propose the change in the timing of the Question Hour. You have laid a wonderful model to the parliamentary practices. You come from a great family which is also having relevance and connect with the Hyderabad State, and you are most welcome to Hyderabad. I wish you all the best. Thank you very much, Sir.

SHRI RAJEEV CHANDRASEKHAR (Karnataka): Thank you, Sir. On behalf of myself and on behalf of the Members, both present and past, I thank you and wish to place on record your decade-long service to the Rajya Saba, the Parliament and our country.

Sir, your leadership of the House has been exemplary, dignified and honourblae despite the frequent provocations and not infrequent provocations by the politics of our Parliament. To me, an independent Member of Parliament, Sir, you have provided counsel, encouragemet and support and most importantly the rare commodity of

[Shri Rajeev Chandrasekhar]
talking time in the Parliament that has been in short supply to the Independents of this House. Sir, for all this, I thank you and salute you. It has been an honour to know you and to work with you. I wish you the very best and I hope you carry with you good memories of your time with us. Thank you, Sir. Jai Hind.

SHRI ABDUL WAHAB (Kerala): Sir, you are a role model for us, especially for the Indian secular Muslims. I always say that India is the best place for any Muslim to live in the world. Unfortunately, some people make some mishief and the majority of us are under suspicion. But under your leadership, we know the responsibilities of Indian Muslims in India. We all respect you and we pray to the Almighty to give you good health in your life and जन्नतुल फिरदौस hereafter. Thank you very much.

SHRI V. VIJAYASAI REDDY (Andhra Pradesh): Sir, on behalf of my Party and my Party President, Shri Y.S. Jaganmohan Reddy, I am really grateful to you for the contributions you have made for upholding the Parliamentary values and the way you have conducted the House and the proceedings of the House.

Sir, I was one of the new Members who entered in this temple of democracy about one year back and everything was new to me – the House, the procedures, the conduct, the politics and what not. Sir, during this one-year period – I am not exaggerating – I got the real guidance, advice and nuances as to how to raise issues as per the procedure, time management, focus on the subjects without deviation and optimal utilisation of time, and what not. On all these issues, you have guided me and I am really thankful to you.

Lastly, Sir, in conclusion, I wish to say that I am very grateful for the opportunity given to me and pray to the Almighty to keep you in good health and be in the service of the nation. My memories of this one year with you will last for a lifetime. I take the best and forget the rest. Some day, I will find that this was the best of my times. Thank you, Sir.

सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री रामदास अठावले)ः ऑनरेबल चेयरमैन सर,

आप जा रहे हैं दस साल की यादों को यहां छोड़ कर,
आप जा रहे हैं सत्ताधारी और विरोधी दलों को जोड़ कर।
आपने हम सभी का जीत लिया था दिल,
इसलिए आज हमें बहुत हो रहा है फील।
नियमों की दिशा से हाउस को चलाने वाले आप थे बहुत अच्छे व्हील,
इसलिए आपने सैकड़ों पास कर दिये थे यहां बिल।

मेरा छोटा है पक्ष, मेरा छोटा था पक्ष,
लेकिन हमेशा आपका मेरी तरफ रहता था लक्ष्य।
आपने मजबूत किया था राज्य सभा का कक्ष,
इसलिए हम सभी सदस्य रहे थे दक्ष।

सर, हमें बहुत खुशी है कि आपने दस साल तक इस हाउस की गरिमा को बनाए रखने का काम किया। आपने बाबा साहेब अम्बेडकर जी के संविधान के मुताबिक भारत को मजबूत करने की भूमिका निभाई। इन दोनों को संभालना बहुत मुश्किल था। हमें संभालना ज्यादा मुश्किल नहीं था, लेकिन सामने वालों को संभालना मुश्किल था। उसके बावजूद भी आपने कोई partiality न करते हुए, पारदर्शिता रखते हुए इस हाउस को बहुत ही अच्छी तरह से चलाने का काम किया है। इसके लिए हमें बहुत गर्व है। आप उपराष्ट्रपति भी रहे हैं, आप माइनॉरिटी कमीशन के चेयरमैन भी रहे हैं। आपका काम बहुत अच्छा रहा है। हम भविष्य में भी आपकी अपेक्षा करते हैं। हम चाहते थे कि आपको एक बार और मौका मिले, आपको पांच साल और मिलें, लेकिन आप उधर के थे और इधर से मिलना मुश्किल था। आपके बारे में हम सभी लोगों को बहुत गर्व है, बहुत बड़ा अभिमान है कि भविष्य में भारत की एकता मज़बूत करने के लिए आप बहुत अच्छा काम करते रहेंगे। चाहे दलित हो, मुसलमान हो, हिन्दू हो, सिख हो या ईसाई हो, सभी लोगों को आपस में जोड़कर, नरेंद्र मोदी जी की सरकार जो काम कर रही है, उसे आगे ले जाने के लिए हम सब मिलकर काम करेंगे। अगर आपका आशीर्वाद हमें मिलेगा, तो और 10-15 साल तक हम यहां रहेंगे और इसी तरह आगे बढ़ेंगे। इन शब्दों के साथ, मैं आपको धन्यवाद देता हूं, जय हिन्द, जय भारत।

MR. CHAIRMAN: Thank you. Now, Shri Rajiv Pratap Rudy, I find your name here.

THE MINISTER OF STATE OF THE MINISTRY OF SKILL DEVELOPMENT AND ENTREPRENEURSHIP (SHRI RAJIV PRATAP RUDY): Sir, I just want to thank you because I was there on the other side for four years. Then, I went to the Lok Sabha and being a part of the Treasury Bench, I am here.

Sir, in my personal life with you, I have travelled with you extensively. मैं जानता हूं कि आपके कुछ child-like imaginations हैं, जिनके आधार पर आप कई बार बहुत कुछ करना चाहते हैं, and that was related to aviation, that was related to cars, that was related to golf. मुझे ऐसा लगता है कि इसके बाद आपके पास पर्याप्त समय होना चाहिए। आप हमेशा हमारे Constitution Club के संरक्षक रहे, you used to come for the Parliamentarian's car rally. These were your private moments, which we shared with you, especially when you ask a lot of questions on aviation and golf. I would desire and feel that once you are free with this great assignment, you will be a part of us and we would like to share those personal moments with you again, Sir. Thank you.

MR. CHAIRMAN: Now, Dr. Maitreyan. He is such an old friend that he has to be given time.

DR. V. MAITREYAN (Tamil Nadu): Thank you very much, Sir. This is my thirteenth year in Rajya Sabha and of those, for ten years, you have been my Chairman. 'जाने कहां गए वो दिन' Sir, I still vividly remember your initial years after you took over as the Chairman of this House. Being a career diplomat, you were stickler to rules. You will not brook over-indulgence by Members of the House. I remember, on 24th March, 2008, I had given a notice for the suspension of the Business of the day under Rule 267 to raise the issue of impropriety of the then Union Minister. As usual, you did not allow me to raise it. The Secretariat of Rajya Sabha dug out from the archives of the Rules Book that there exists a provision by which a Member can be asked to withdraw. You did not invoke that on me. You only threatened that I am going to invoke that if I did not go back to my seat. But, then, that single statement made me either famous or infamous in my State at least. ...(*Interruptions*)... For around 20 years since 1984, this House, perhaps, never remembered that rule. You brought that rule to limelight and, subsequently, it was used on another person also. Sir, those years, we were three musketeers – श्री एस.एस. अहलुवालिया, श्री नरेश अग्रवाल और मैं हाउस में इतना तंग करते थे, रोज़ सवेरे सोच लेते और तय कर लेते थे कि आज हाउस चलने देना है या नहीं चलने देना है और यहां आकर वही करते थे। इतना तंग करते थे, लेकिन आज क्या हो गया – श्री अहलुवालिया दूसरे हाउस में चले गए, मैं silent हो गया और श्री नरेश अग्रवाल Mr. 267 बन गए। ...(**व्यवधान**)... But, in spite of our repeated over-indulgence, you were so kind to us. Today, our Party is the third-largest Party in Parliament with fifty Members but during those years we were a small group of eight, nine or ten Members. In spite of that, you gave me ample opportunities. In fact, I had the rare distinction of initiating one of the most important debates which touched an emotional pitch in those days, that is, the FDI Multi-Brand Retail. You had shown so much of love and affection on me, I will never be able to forget. I wish you a long and a healthy life. I am told, like me, you also love cricket. I wish you score a century.

SHRI Y.S. CHOWDARY (Andhra Pradesh): Respected Mr. Chairman, Sir, I can only say that I have learnt from you how to be patient while saying things loudly but still exhibiting inner calmness. Particularly, between 2000 and 2014, due to the A. P. Re-organisation Act, we remember the amount of patience you have exhibited and guided us; and still you did not take any drastic action. I went to school and college from K.G. to P.G. but I never had an opportunity to see such a kind of noise which this House has witnessed. Sir, you have really supported and accommodated us. We were aware that we will be losing the war. We fought the war but we lost the battle. Thank you very much, Sir, we can always remember and I wish ...(*Interruptions*)... We won the election. That is a different thing. So, I wish the Almighty to give you good health and happy life. Thank you very much. ...(*Interruptions*)...

SHRI DEREK O'BRIEN: Sir, may I make a request to you?

MR. CHAIRMAN: Yes.

SHRI DEREK O'BRIEN: Sir, this cannot be an all men's club. Please request a lady also to wish you good-bye.

MR. CHAIRMAN: Yes, yes, absolutely; I am coming to that.

SHRI DEREK O'BRIEN: Because we are all men who have spoken.

MR. CHAIRMAN: Hon. Members, I have one request to make; my last request. I am looking at the watch closely because I have to call on Rashtrapatiji. ...(*Interruptions*)...

SHRIMATI VIPLOVE THAKUR (Himachal Pradesh): Sir, only two minutes.

MR. CHAIRMAN: Just a minute, please. Let me go by the names here. Now, Rahman Khan Saheb.

श्री के. रहमान खान (कर्णाटक)ः इज़्ज़तमआब चेयरमैन साहब, आज आप अपनी जिम्मेदारी से सुब्कदोश हो रहे हैं। मुझे यह शर्फ हासिल है कि as the Deputy Chairman of this House, मुझे आपके साथ पांच साल काम करने का मौका मिला। मैंने आपसे बहुत कुछ सीखा। हालांकि अपनी लगभग 40 साल की पॉलिटिकल लाइफ में मैं लगभग 35 साल लेजिस्लेटर रहा हूँ, मगर आपके साथ रहकर मुझे आपके साथ काम करने का मौका मिला और बहुत कुछ सीखने का मौका मिला। आपके इस हाउस के चेयरमैन होने से पहले भी as the Chairman of the National Commission for Minorities and as the Vice-Chancellor of the Aligarh Muslim University, मेरी मुलाकात आपसे होती रहती थी, मगर मैंने आपमें देखा कि आप एक बेबाक लीडर हैं। चाहे डिप्लोमैट किहए या एक इंटेलेक्चुअल कहिए, आप अपने विचारों को सामने रखने में हिचिकचाते नहीं हैं और लोगों को गाइड भी करते रहते हैं।

इस हाउस को आपने जो पांच साल चलाया– राज्य सभा में मेरा यह 24वां साल है और इन 24 सालों में मैंने इस हाउस के वे दिन भी देखे हैं, जो अच्छे दिन कहलाते थे और आज भी मैं देख रहा हूँ कि लोग कहते हैं कि इसकी गरिमा कम होती जा रही है, मगर मैं नहीं समझता कि इसकी गरिमा कम हो रही है। आप हर वक्त हमारी जिम्मेदारियों की याददहानी करते थे। राज्य सभा के जो मेरे पांच साल हैं, वे मेरी ज़िन्दगी के बेहतरीन पांच साल हैं, जब मुझे आपकी रहनुमाई में काम करने का मौका मिला, मैं उसका शुक्रिया अदा करता हूँ। मैं अल्लाह-रब्बुलइज़्ज़त से दुआ करता हूँ कि वे आपको लम्बी उम्र दें और आपसे ज्यादा ख़िदमत लें। चाहे वाइस-प्रेसिडेंट की जिम्मेदारी हो या Chairman of the House की जिम्मेदारी हो, यह तो एक फ़ेज है। इसके बाद भी आपको मुल्क की, मिल्लत की, क़ौम की जिम्मेदारी को निभाना है। मैं उम्मीद करता हूँ कि अल्लाह आपको उम्र दें, ताकि आप अपनी ख़िदमत जारी रखें, शुक्रिया।

†جناب کے رحمان خان (کرناٹک): عزت ما ب چئیرمین صاحب، آ ج اپ اپنی ذمہ داری

† Transliteration in Urdu script.

سے سبکدوش ہورہے ہیں۔ مجھے یہ شرف حاصل ہے کہ as the Deputy Chairman of this House، مجھے اپ کے ساتھ پانچ سال کام کرنے کا موقع ملا۔ میں نے آ پ سے بہت کچھ سیکھا۔ حالانکہ اپنے لگ بھگ 40 سال کے پارلیٹیکل لائف میں میں لگ بھگ 35 سال لیجسلیچر رہا ہوں، مگر اپ کے ساتھ رہ کر مجھے اپ کے ساتھ کام کرنے کا موقع ملا اور بہت کچھ سیکھنے کا موقع ملا۔ اپ کے اس ہاؤس کے چیئرمین ہونے سے پہلے بھی as the Chairman of National Commission for Minorities and as the Vice-Chancellor of Aligarh Muslim University، میری ملاقات آ پ سے ہوتی رہتی تھی مگر میں نے اپ میں دیکھا کہ اپ ایک بے باک لیڈر ہیں۔ چاہے ڈپلومیٹ کہیئے یا ایک انٹلیکچؤل کہیئے، اپ اپنے وِچاروں کو سامنے رکھنے میں ہچکچاتے نہیں، اور لوگوں کو گائیڈ بھی کرتے رہتے ہیں۔

اس ہاؤس کو اپ نے جو پانچ سال چلایا۔ راجہ سبھا میں میرا یہ 24 واں سال ہے اور ان 24 سالوں میں میں نے اس ہاؤس کے وہ دن بھی دیکھے ہیں، جو اچھے دن کہلاتے تھے اور اج بھی میں دیکھ رہا ہوں کہ لوگ کہتے ہیں کہ اس کی گریما کم ہوتی جارہی ہے، مگر میں نہیں سمجھتا کہ اس کی گریما کم ہورہی ہے۔ اپ ہر وقت ہماری ذمہ داریوں کی یاد دہانی کرتے تھے۔ راجیہ سبھا کے جو میرے پانچ سال ہیں، وہ میری زندگی کے بہترین پانچ سال ہیں، جب مجھے اپ کی رہنمائی میں کام کرنے کا موقع ملا، میں اس کا شکریہ ادا کرتا ہوں۔ میں لله رب العزت سے دعا کرتا ہوں کہ وہ اپ کو لمبی عمر دے اور اپ سے زیادہ خدمت لے۔ چاہے وائس پریزیڈینٹ کی ذمہ داری ہو یا چیئرمین اف دی ہاؤس کی ذمہ داری ہو، یہ تو ایک فیز ہے۔ اس کے بعد بھی اپ کو ملک کی، ملت کی، قوم کی ذمہ داری کو نبھانا ہے۔ میں امید کرتا ہوں کہ اللہ آپ کو عمر دے تاکہ آپ اپنی خدمت جاری رکھیں، شکریہ۔

MS. ANU AGA (Nominated): Sir, by your values and behaviour, you have, at all times, brought dignity and stature to this House. I have witnessed your anguish when the House was disrupted and not allowed to function. And, yet you have remained impartial and fair and never showed any preference for any person or party.

On one occasion, when travelling abroad with you, I saw the respect you commanded from the political heads and our Indian diaspora.

We will miss your dignified presence, and wish you best of health and look forward to guiding our nation with your love and wisdom. Thank you.

MR. CHAIRMAN: Now, Shri K. Parasaran.

SHRI K. PARASARAN (Nominated): Sir, I thank you for giving me this opportunity. It has been a very wonderful experience in this House, particularly, when you were presiding. You were playing two constitutional roles. One, as the Chairman of this august House and the other, as the Vice-President of India. I have seen you functioning here and how you held all of us together even when there were exchanges. I have heard you outside and I have also read your writings. I am wondering whether I should praise you for your role as Vice-President or for your role as Chairman of this great House. I remember and quote two lines from a Sanskrit verse, "annyonya pavanam bhoot ubhayaa sametya."

Your position as the Vice-President has added dignity to this office as Chairman, and your position as Chairman, here, has added dignity to the Vice-President. I pray God to bless you to live the Upanishadic age of 120 years with sound health and happiness and guide this nation with all your knowledge and experience. Thank you very much.

MR. CHAIRMAN: Now, Shri Amar Singh.

श्री अमर सिंह (उत्तर प्रदेश): महोदय, आज का दिन बहुत महत्वपूर्ण दिन है, लेकिन मैं वे सभी बातें नहीं दोहराऊंगा जो हमारे दूसरे साथी बोल चुके हैं। मैं सिर्फ इतना ही कहना चाहूंगा, मुझे प्रसिद्ध कवि जय शंकर प्रसाद की अमर काव्य रचना "कामायनी" की पहली पंक्ति याद आ रही है:–

"हिमगिरि के उत्तुंग शिखर पर, बैठ शिला की शीतल छांह,
एक पुरुष, भीगे नयनों से, देख रहा था प्रलय प्रवाह।
नीचे जल था ऊपर हिम था, एक तरल था एक सघन,
एक तत्व की ही प्रधानता, कहो उसे जड़ या चेतन।"

आप इस सदन के जिस शिखर पर बैठे हैं, आपने जड़ को भी देखा है, चेतन को भी देखा है। हमारे बहुत बड़े नेता और हमारे ऊपर जिनकी बड़ी कृपा थी, स्वर्गीय चंद्रशेखर जी कहते थे, ऊंचाई के शिखर पर पहुंचना आसान है, लेकिन वहां बने रहना बहुत मुश्किल है। आप उस शिखर पर पहुंचे भी और दस साल गरिमा के साथ बने भी रहे, यह बहुत बड़ी बात है – इसके लिए आप बधाई के पात्र हैं। यह समझना चाहिए कि सौम्यता, शिष्टता, डिग्निटी – इनके समन्वय से सिर्फ ऊपर जाया ही नहीं जा सकता उस पर बने रहना भी बहुत आसानी से हो सकता है। हमारे जैसे लोग – हम आगे भी बैठे, बीच में भी बैठे और हमारे एक मित्र की कृपा से अब हम पीछे भी बैठे हैं और इसके बाहर सड़क है, शायद कभी वहां भी जाना पड़ जाए। आपको बहुत-बहुत बधाई और आपके दीर्घायु जीवन की कामना करते हुए मैं अपनी बात समाप्त करता हूं, धन्यवाद।

SHRI M. P. VEERENDRA KUMAR (Kerala): Sir, I thank you for the consideration that you have given. Sir, I will say only two words. When I was in hospital with

[Shri M. P. Veerendra Kumar]

brain surgery and I could not take oath, you allowed me to come to your office in the wheel-chair and take oath. The consideration you showed me, the affection you showed me, not only made me feel that I should be in Rajya Sabha to discharge my responsibility, but you also made me feel that I should live. I have the fate to live now and I feel that I am confident because of you. I wish you well, Sir. Thank you very much.

MR. CHAIRMAN: Thank you very much. Now, Dr. Narendra Jadhav.

DR. NARENDRA JADHAV (Nominated): Thank you Mr. Chairman, Sir. Sir, it has been a great honour for having associated with you for several years, even before your becoming the hon. Vice-President of our country. I think, for the first time, we met at the Asia and Middle East Conference in 1990s, in which you had represented the Government of India and I was a part of the Delegation from the Reserve Bank of India side. Sir, even before I came to this august House, as the Vice-President you were very kind and generous to release several of my books on Dr. Ambedkar and Gurudev Rabindranath. After coming to this House, you have been a pillar of strength, a friend, a philosopher, a guide for newcomers like me. In the very first meeting that I had with you, you said, "I am entering the Rajya Sabha with a reputation of a size of an elephant." That was extraordinarily encouraging for me. There was a talk that you were, once upon a time, an umpire. I remember our conversation when I had asked you as to how is this job, you said that this job is simple and difficult at the same time. What is simple about this job is that it is like refereeing a football match. What is difficult about this job, you said, Sir, that both teams feel that you are taking the side of the other team. Sir, I have learnt so much from you in the last one year I have spent in the Upper House, and I wish you all the very best. Thank you very much.

MR. CHAIRMAN: Thank you, Dr. Narendra Jadhav. Now, Shrimati Roopa Ganguly, but just one minute because I have constraint of time.

SHRIMATI ROOPA GANGULY (Nominated): Sir, I will take 30 seconds.

सर, हमें करीब चार साल पहले आपके हाथ से नेशनल अवार्ड लेने का दिन याद है। मुझे राज्य सभा में आए अभी आठ महीने ही हुए हैं, तो आपसे अलग से अच्छे से बहुत कम बात हो पायी। हम आपसे और इस सदन से बहुत कुछ सीख रहे हैं। हम एक छोटी सी बात आपसे कहना चाहेंगे, हम तीस सेकेंड में अपनी बात खत्म कर देंगे।

आज इस देश में न्याय, मान और frustration सारी चीज़ों पर आप जैसे लोग ध्यान दीजिए। पुरलिया नामक एक गांव है, जहां पर चार साल का एक deaf and mute बच्चा है। उसके माता-पिता ने गुस्से से, नाराजगी से दुखी होकर बच्चे को पटक दिया है। मैं आपसे यह रिक्वेस्ट

करती हूं कि आप इतनी बड़ी जिम्मेदारी से मुक्त हो रहे हैं और आपको थोड़ा-सा फ्री टाइम मिलेगा। आप बंगाल में आइए, लोगों को frustration से बचाइए। आपका इतना wisdom है, आप हम लोगों का साथ दीजिए, धन्यवाद।

MR. CHAIRMAN: Nareshji, before you raise any point of order, please take only one minute because I can't be late.

श्री नरेश अग्रवालः सर, मैंने सोचा था कि जब आप समय नहीं देंगे, तो हम प्वाइंट ऑफ आर्डर उठा देंगे और आप समय दे देंगे। माननीय सभापति जी, कहा जाता है कि व्यक्ति कुर्सी से पहचाना जाता है, लेकिन आपने सिद्ध किया कि कुर्सी व्यक्ति से पहचानी जाती है। आप राजनैतिक खिलाड़ी नहीं रहे हैं, आपने विदेश सेवा की, लेकिन विदेश सेवा में राजनीतिक लोगों से मिलते-मिलते आप इतने निपुण हो गये कि आपने इस कुर्सी पर बैठकर हम सब को काफी कुछ राजनीति सिखाई और हम काफी कुछ उन चीजों को सीखे हैं। मैं तो चेयर में दो व्यक्तियों का नाम अपनी जिदगी में कभी नहीं भूलूंगा, मुझे राजनीति में 40 वर्ष हो गए — एक आपका और दूसरे केसरीनाथ त्रिपाठी जी का, जो उत्तर प्रदेश विधान सभा के अध्यक्ष थे। जिन्होंने प्रेरित करके मुझे सिखाया कि सदन में कैसे बोलो, कैसे चीजों को उठाओ, कानून कैसे पढ़ो, नियम को कैसे रखो और शायद इसी वजह से हम इस लायक बने हैं। मैं तो यही कहूंगा कि आपने मुझे अनुशासन सिखाया, तो मैंने सदन को प्वाइंट ऑफ आर्डर सिखाया। मैंने कुछ न कुछ सिखाया है। कल आप कहीं पर बोल रहे थे और आपने अपनी कुछ चिंता व्यक्त की, उसके बारे में आज टी.वी. वाले मुझसे कुछ पूछ रहे थे। हम सब को उस पर चिंता करनी चाहिए और देश में कोई समाज, कुछ लोग अगर अपने को अलग या अपने को कहीं न कहीं असुरक्षित समझें, तो यह बहुत अच्छा नहीं होगा। हम सबका, इस सदन के सदस्यों का कर्तव्य है और हम आपको वचन देते हैं कि आपकी उस पीड़ा को हम लोग दूर करेंगे। विदाई कष्टदायक होती है, लेकिन विदाई का मज़ा भी बहुत अलग होता है। विदाई कष्टदायक होती है, लेकिन विदाई बाद में सुख भी देती है। मुझे उम्मीद है कि आपकी लम्बी आयु हो और आप इसी तरीके से राष्ट्र की सेवा करते रहें। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि निरंतर आपसे मिलता रहूंगा। आप हमारे पड़ोसी होने जा रहे हैं, मैं आपसे मिलता रहूंगा, आपसे बात करता रहूंगा और जो कुछ सीख सकता हूं, वह आपसे सीखने का प्रयास करूंगा। बहुत-बहुत धन्यवाद।

MR. CHAIRMAN: Thank you. Hon. Deputy Chairman. ...(*Interruptions*)...

SHRI SITARAM YECHURY: Mr. Chairman, Sir, you have the bell handy. ...(*Interruptions*)...

DEPUTY CHAIRMAN (PROF. P. J. KURIEN): I wanted to adhere to the time. That is why I asked the Chairman whether there is time.

There are a lot of thoughts in my mind now, but I know there is paucity of time and, therefore, I don't wish to say many of those things. Mr. Athawale said that we all wanted the Chairman to continue. Yes, that is what even I am saying. We are not the makers of our own destiny. Yechuryji talked about philosophy with a Hindi song. There is a Hindi song which goes like "ये मत पूछो, कल क्या होगा, जो भी होगा, अच्छा होगा।"

[Prof. P. J. Kurien]

We are not the creators of our own destiny. If we were, we would have unanimously passed a resolution saying that our Chairman should continue, but we are not. ...(*Interruptions*)...

Sir, whatever position you held, you were par excellence in those positions. As the Chairman of this House, all of us have admiration for you. There might have been some difference of opinion about your rulings, but all of us have great admiration for you. Sir, as the Deputy Chairman who worked with you, I can say that I enjoyed it; it was a privilege for me to work with you. You protected me, you guided me, you supported me and you corrected me. I am very, very grateful to you for that.

Sir, I would like to mention some of the reforms you made. The shifting of Question Hour has had a great impact because Question Hour is the most important time when we can hold the Government accountable. Not only that, Zero Hour has been shifted to the beginning and is being regulated, and now, many Members, especially back-benchers too, get to make their Zero Hour submissions. That was a new thing. I won't take much time. I implemented your decision, that a Bill should not be passed in din, fully and honestly.

Sir, I don't wish to take more time. My best wishes and greetings to you for a happy and long, long and blessed life!

Thank you very much, Sir.

MR. CHAIRMAN: Thank you very much, Dr. Kurien.

Thank you, all the Members. Hon. Leader of the House, hon. Leader of Opposition, hon. Deputy Chairman, hon. leaders of political parties and hon. Members of the Rajya Sabha,

"मुझ पे इल्ज़ाम इतने लगाए गए,
बेगुनाही के अंदाज़ जाते रहे।"

A decade is a long time in the life of an individual. It is easy, yet imprudent, to reflect upon it at this early stage. The eloquence of preceding speakers and the generosity of their sentiments must remain unmatched. I would be remiss if I did not acknowledge its intensity and thank them individually and collectively. When I was welcomed in this House 10 years back, an eminent leader, who is now no longer with us in this world, gave a piece of advice. He said, and I quote him. "कल के बाद आपको बहुत तकलीफ होगी। मुझे आपसे हमदर्दी है कि आप इस तकलीफ को झेल जाएं और एक सलाह भी है कि हम लोग कितना भी हल्ला करें, आप अपने चेहरे पर गुस्सा

1.00 P.M.

मत दिखाइए और हमेशा हंसते रहिए। हम सब के सब लोग देश के दुश्मन नहीं हैं, लेकिन हम सब एक मुस्कान पर फिदा हो जाते हैं और चुपचाप बैठ जाते हैं।"

I confess I had no difficulty in benefitting from this eminently sensible counsel. I discovered in these years the validity of the dictum that wishing to be friends is quick work but friendship is a slow ripening fruit.

It needs to be nurtured. I venture to think that I succeeded in a fair measure. The Chair is like an umpire in cricket or a referee in a hockey match witnessing the play and the players, but without becoming a player. Its only source of reference is the book of rules. This House is a creation of the Constitution and reflective of the wisdom and foresight of the founding fathers who wished it to portray India's diversity and to be a calibrated restraint on hasty legislation. It has upheld democracy's sacred creed that discussion, instead of being a stumbling block in the way of action, is, in fact, an indispensable preliminary to wise action. Deviation from the golden rule contributes neither to diligent policy- making nor to our claim to be a mature democracy based on rule of law. In this context, I would like to recall as I did in August, 2012, the words of the most distinguished of my predecessors, Dr. Sarvepalli Radhakrishnan and I quote, "A democracy is distinguished by the protection it gives to minorities. A democracy is likely to degenerate into tyranny if it does not allow the opposition groups to criticise fairly, freely and frankly the policies of the Government. But, at the same time, minorities also have their responsibilities. Well, they have every right to criticise, their right to criticise should not degenerate into wilful hampering and obstruction of the work of Parliament. All groups, therefore, have their right and have their responsibilities." I fervently hope that all sections of the House would seek business is watched by the citizen body. As I leave this Chair, I wish the Rajya Sabha well. I wish success to its Members in the responsibility entrusted to them. I thank the Secretary-General, Shri Shumsher K. Sheriff and the officials of the Rajya Sabha Secretariat for the exemplary manner in which they attended to their responsibilities. An Urdu couplet is perhaps an appropriate way of farewell. आओ कि आज खत्म करें दास्तान-ए-इश्क, अब खत्म-ए-आशिकी के फसाने सुनाएं हम। जयहिन्द।

MR. CHAIRMAN: The House is adjourned till 2.00 p.m. Thank you very much.

The House then adjourned for lunch at three minutes past one of the clock.